PRGI No. GJHIN/25/A2786

नवसर्जन संस्कृति

नवसर्जन संस्कृति

PUBLISHED HIINDI DAILY FROM AHMEDABAD

वर्ष : 01
अंक : 279
दि. 12.07.2026, रविवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

पंजाब कांग्रेस में नेतृत्व को लेकर तेज हुई सियासी जंग, संगठन की कमान से लेकर 2027 के मुख्यमंत्री चेहरे तक छिड़ी रणनीतिक लड़ाई

चंडीगढ़। पंजाब कांग्रेस में संगठनात्मक नेतृत्व को लेकर लंबे समय से चल रही अंदरूनी खींचतान अब खुलकर सामने आने लगी है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष पद को लेकर पार्टी के भीतर जारी असहमति ने नया राजनीतिक मोड़ ले लिया है। पूर्व मुख्यमंत्री और जालंधर से सांसद चरणजीत सिंह चन्नी ने अपने समर्थक नेताओं के साथ शनिवार को पंजाब कांग्रेस के प्रभारी भूपेश बघेल से मुलाकात कर अपनी राजनीतिक चिंताओं और मांगों को विस्तार से रखा। हालांकि कई घंटे चली चर्चा के बाद भी किसी तरह की सहमति नहीं बन सकी। अब इस पूरे विवाद पर अंतिम निर्णय कांग्रेस हाईकमान के स्तर पर होने की संभावना जताई जा रही है।

सूत्रों के अनुसार, बैठक के दौरान चन्नी समर्थक नेताओं ने स्पष्ट रूप से दो प्रमुख मांगें रखीं। पहली मांग यह थी कि वर्तमान प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अमरिंदर सिंह राजा वड़िंग को संगठन की कमान से हटाया जाए और नए नेतृत्व पर विचार किया जाए। दूसरी मांग यह रखी गई कि यदि अध्यक्ष पद में बदलाव संभव नहीं है, तो पार्टी 2027 के पंजाब विधानसभा चुनाव के लिए चरणजीत सिंह चन्नी को मुख्यमंत्री पद का आधिकारिक चेहरा घोषित करे। साथ ही विधानसभा चुनाव में टिकट वितरण और चुनावी रणनीति तय करने में उन्हें प्रमुख भूमिका दी जाए।

इन मांगों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि विवाद केवल संगठनात्मक पद तक सीमित नहीं है, बल्कि 2027 के विधानसभा चुनाव के बाद मुख्यमंत्री पद की संभावित दावेदारी को लेकर भी पार्टी के भीतर राजनीतिक समीकरण बनने लगे हैं। कांग्रेस के भीतर यह धारणा लंबे समय से रही है कि जिस नेता के नेतृत्व में संगठन चुनाव लड़ता है, चुनाव में सफलता मिलने की स्थिति में मुख्यमंत्री पद पर उसकी दावेदारी स्वाभाविक रूप से मजबूत हो जाती है। यही कारण है कि प्रदेश अध्यक्ष पद को लेकर चल रही रस्साकशी को केवल संगठनात्मक नियुक्ति नहीं, बल्कि भविष्य की सत्ता की राजनीति से जोड़कर देखा जा रहा है।

बैठक से पहले मीडिया से बातचीत के दौरान चरणजीत सिंह चन्नी का एक संक्षिप्त लेकिन चर्चित बयान भी राजनीतिक हलकों में चर्चा का विषय बन गया। उन्होंने कहा, "तेल देखेंगे, तेल की धार देखेंगे।" राजनीतिक विश्लेषक इस टिप्पणी को पार्टी नेतृत्व के लिए एक संकेत और दबाव की रणनीति के रूप में देख रहे हैं। हालांकि चन्नी ने इस बयान का विस्तार से कोई अर्थ नहीं बताया, लेकिन इसे संगठन में अपनी राजनीतिक स्थिति और आगे की रणनीति से जोड़कर देखा जा रहा है।

बताया जा रहा है कि कांग्रेस के पंजाब प्रभारी भूपेश बघेल ने बैठक के दौरान चन्नी समर्थकों की मांगों पर कोई ठोस आश्वासन नहीं दिया। उन्होंने स्पष्ट किया कि प्रदेश अध्यक्ष की नियुक्ति, मुख्यमंत्री पद के चेहरे की घोषणा अथवा संगठन से जुड़े बड़े राजनीतिक फैसले लेने का अधिकार केवल कांग्रेस हाईकमान के पास है। ऐसे में अब यह पूरा मामला पार्टी के शीर्ष नेतृत्व के विचार के लिए भेजे जाने की संभावना है। पंजाब कांग्रेस में प्रदेश अध्यक्ष पद को लेकर बढ़ी सक्रियता के पीछे पिछले चुनावों का राजनीतिक अनुभव भी एक महत्वपूर्ण कारण माना जा रहा है। वर्ष 2017 के विधानसभा चुनाव में तत्कालीन प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कैप्टन अमरिंदर सिंह के नेतृत्व में कांग्रेस ने स्पष्ट बहुमत हासिल किया था। चुनाव जीतने के बाद पार्टी ने उन्हें मुख्यमंत्री बनाया। इसके बाद से पंजाब कांग्रेस में यह धारणा और मजबूत हुई कि संगठन की कमान संभालने वाला नेता भविष्य में मुख्यमंत्री पद का स्वाभाविक दावेदार बन जाता है।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि चरणजीत सिंह चन्नी इसी राजनीतिक परंपरा को ध्यान में रखकर अपनी रणनीति आगे बढ़ा रहे हैं। यदि उन्हें संगठन की कमान मिलती है तो विधानसभा चुनाव की तैयारी, टिकट वितरण, प्रचार अभियान, संगठनात्मक नियुक्तियों और चुनावी रणनीति पर उनका प्रभाव स्वाभाविक रूप से बढ़ जाएगा। ऐसी स्थिति में चुनाव के बाद मुख्यमंत्री पद की दौड़ में उनका दावा भी मजबूत हो सकता है। चन्नी समर्थकों का तर्क है कि पंजाब में कांग्रेस को फिर से मजबूत स्थिति में लाने के लिए संगठन में नए नेतृत्व की आवश्यकता है। उनका आरोप है कि मौजूदा प्रदेश नेतृत्व आम आदमी पार्टी सरकार के खिलाफ प्रभावी विपक्ष की भूमिका निभाने में अपेक्षित सफलता हासिल नहीं कर पाया है। उनका कहना है कि यदि संगठन को नए नेतृत्व के साथ सक्रिय किया जाए तो कांग्रेस आगामी चुनावों में बेहतर प्रदर्शन कर सकती है।

दूसरी ओर, अमरिंदर सिंह राजा वड़िंग लगातार इन आरोपों को खारिज करते रहे हैं। उनका कहना है कि पंजाब कांग्रेस पूरी तरह एकजुट है और संगठन लगातार जनता के मुद्दों को उठा रहा है। वड़िंग का दावा है कि पार्टी के भीतर संवाद की प्रक्रिया जारी है और सभी नेता मिलकर कांग्रेस को मजबूत बनाने की दिशा में कार्य कर रहे हैं। हालांकि राजनीतिक घटनाक्रम यह संकेत दे रहे हैं कि संगठन के भीतर नेतृत्व को लेकर मतभेद पूरी तरह समाप्त नहीं हुए हैं। इस पूरे विवाद में पंजाब की सामाजिक और जातीय राजनीति भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती दिखाई दे रही है। चरणजीत सिंह चन्नी राज्य के पहले दलित मुख्यमंत्री रहे हैं। पंजाब में अनुसूचित जाति समुदाय की आबादी लगभग एक-तिहाई मानी जाती है, जो चुनावी दृष्टि से अत्यंत प्रभावशाली है। चन्नी समर्थकों का तर्क है कि कांग्रेस यदि दलित मतदाताओं के बीच अपनी पकड़ मजबूत रखना चाहती है तो संगठन और चुनावी नेतृत्व में एक मजबूत दलित चेहरे को आगे लाना उसके लिए राजनीतिक रूप से लाभकारी हो सकता है। हाल के दिनों में पूर्व केंद्रीय मंत्री बूटा सिंह के परिवार की ओर से भी सार्वजनिक रूप से यह मांग उठाई गई थी कि कांग्रेस को 2027 के विधानसभा चुनाव के लिए चरणजीत सिंह चन्नी को मुख्यमंत्री पद का चेहरा घोषित करना चाहिए। इससे यह संकेत भी मिला कि चन्नी के समर्थन में पार्टी के भीतर और बाहर विभिन्न वर्गों में राजनीतिक माहौल तैयार करने की कोशिश की जा रही है।

राजनीतिक हलकों में एक और घटनाक्रम की भी चर्चा है। प्रदेश अध्यक्ष पद को लेकर निर्णय सामने आने के बाद चरणजीत सिंह चन्नी ने सार्वजनिक रूप से कांग्रेस नेतृत्व का आभार व्यक्त करने के बजाय अपने मोरिंडा स्थित आवास पर समर्थक नेताओं, पूर्व विधायकों और कार्यकर्ताओं की बैठक बुलाई। इस बैठक को कई राजनीतिक पर्यवेक्षकों ने शक्ति प्रदर्शन के रूप में देखा। माना गया कि इसके माध्यम से चन्नी ने पार्टी नेतृत्व को यह संदेश देने का प्रयास किया कि उनके साथ संगठन के भीतर एक प्रभावशाली समर्थन मौजूद है।

महिलाओं की सुरक्षित यात्रा को मिलेगी नई रफ्तार, दिल्ली की सड़कों पर उतरेंगी 50 नई 'लेडीज स्पेशल' बसें, छात्राओं और बाहरी इलाकों को मिलेगी प्राथमिकता

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली में महिलाओं की सुरक्षित, सुविधाजनक और भरोसेमंद सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था को और मजबूत बनाने की दिशा में दिल्ली सरकार ने एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। सरकार ने 'लेडीज स्पेशल' बस सेवा के विस्तार का फैसला किया है, जिसके तहत जल्द ही 50 नई विशेष बसें दिल्ली की सड़कों पर दौड़ती नजर आएंगी। इन बसों का उद्देश्य महिला यात्रियों, विशेषकर छात्राओं और बाहरी दिल्ली के क्षेत्रों में रहने वाली महिलाओं को सुरक्षित और सुगम यात्रा उपलब्ध कराना है। परिवहन विभाग ने इन बसों के संचालन की तैयारियां शुरू कर दी हैं और इनके लिए उपयुक्त मार्गों के चयन की प्रक्रिया भी तेज कर दी गई है।

परिवहन विभाग के अधिकारियों के अनुसार नई बसों को इस तरह संचालित किया जाएगा कि उन क्षेत्रों को प्राथमिकता मिले जहां बड़ी संख्या में महिलाएं प्रतिदिन सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करती हैं। प्रस्तावित योजना के तहत 50 बसों में से 25 बसें विशेष रूप से छात्राओं के लिए संचालित की जाएंगी। इन्हें यूनिवर्सिटी स्पेशल बस के रूप में चलाया जाएगा ताकि दिल्ली विश्वविद्यालय, विभिन्न कॉलेजों और उच्च शिक्षण संस्थानों में पढ़ने वाली छात्राओं को सुरक्षित और समयबद्ध परिवहन सुविधा मिल सके।

शेष 25 बसों को बाहरी दिल्ली के उन इलाकों में चलाने की योजना बनाई गई है, जहां महिला यात्रियों की संख्या अधिक होने के बावजूद सार्वजनिक परिवहन के पर्याप्त विकल्प उपलब्ध नहीं हैं। सरकार का मानना है कि बाहरी क्षेत्रों से बड़ी संख्या में महिलाएं नौकरी, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और अन्य आवश्यक कार्यों के लिए प्रतिदिन शहर के विभिन्न हिस्सों में यात्रा करती हैं। ऐसे क्षेत्रों में विशेष बस सेवा शुरू होने से उनकी यात्रा अधिक सुरक्षित और सुविधाजनक होगी।

परिवहन विभाग ने बताया कि कुछ संभावित मार्गों की पहचान पहले ही कर ली गई है, जबकि अन्य मार्गों के चयन के लिए विस्तृत अध्ययन किया जा रहा है। अधिकारियों का कहना है कि रूट तय करते समय केवल यात्रियों की संख्या ही नहीं, बल्कि महिलाओं की वास्तविक यात्रा आवश्यकताओं, भीड़भाड़, परिवहन उपलब्धता और सुरक्षा संबंधी पहलुओं को भी ध्यान में रखा जा रहा है।

नई 'लेडीज स्पेशल' बसों में केवल महिला यात्रियों को यात्रा की अनुमति होगी। इन बसों में महिलाओं की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए अतिरिक्त सुरक्षा व्यवस्थाएं भी उपलब्ध कराई जाएंगी। हालांकि सरकार ने सुरक्षा उपायों का विस्तृत विवरण अभी सार्वजनिक नहीं किया है, लेकिन अधिकारियों के अनुसार इन बसों में महिला यात्रियों के लिए अधिक सुरक्षित वातावरण सुनिश्चित करने की दिशा में विशेष व्यवस्था की जाएगी। इससे विशेष रूप से सुबह और देर शाम यात्रा करने वाली महिलाओं को राहत मिलने की उम्मीद है।

दिल्ली सरकार पहले भी सीमित स्तर पर 'लेडीज स्पेशल' बस सेवा संचालित करती रही है। अब इस सेवा को अधिक व्यवस्थित और व्यापक स्वरूप देने की तैयारी की जा रही है। परिवहन विभाग का मानना है कि महिलाओं के लिए अलग बस सेवा उपलब्ध होने से सार्वजनिक परिवहन पर उनका भरोसा और बढ़ेगा तथा वे अधिक सुरक्षित महसूस करेंगी।

रूट निर्धारण के लिए परिवहन विभाग डेटा आधारित योजना पर काम कर रहा है। अधिकारियों के अनुसार 'सहेली पिंक कार्ड' और वर्तमान में उपयोग हो रहे पिंक टिकट से जुड़े यात्रा आंकड़ों का विस्तृत विश्लेषण किया जा रहा है। इन आंकड़ों से यह पता लगाया जा रहा है कि किन मार्गों पर महिला यात्रियों की संख्या सबसे अधिक है, किन क्षेत्रों से सबसे ज्यादा मुफ्त यात्रा का लाभ लिया जा रहा है और किन इलाकों में महिलाओं को अतिरिक्त परिवहन सुविधा की आवश्यकता है। इसी आधार पर नए मार्गों का अंतिम चयन किया जाएगा।

विशेषज्ञों का मानना है कि परिवहन व्यवस्था में डेटा आधारित निर्णय भविष्य की सार्वजनिक सेवाओं को अधिक प्रभावी बना सकते हैं। यदि बसों का संचालन वास्तविक मांग के अनुसार किया जाता है तो यात्रियों को बेहतर सुविधा मिलने के साथ-साथ संसाधनों का भी अधिक कुशल उपयोग संभव होगा।

दिल्ली सरकार लगातार राजधानी की सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था का विस्तार कर रही है। इसी क्रम में 7 जुलाई को दिल्ली परिवहन निगम (डीटीसी) के बेड़े में 300 नई इलेक्ट्रिक बसों को शामिल किया गया था। इसके बाद डीटीसी के पास कुल बसों की संख्या बढ़कर लगभग 6,600 हो गई है। इनमें 4,845 इलेक्ट्रिक बसें तथा 1,755 सीएनजी बसें शामिल हैं।

खामेनेई की मौत के बाद ईरान का सख्त संदेश, नए सर्वोच्च नेता मुज्तबा ने प्रतिशोध का किया ऐलान, पश्चिम एशिया में फिर बढ़ा तनाव

तेहरान। ईरान के पूर्व सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई के अंतिम संस्कार के बाद देश के नए सर्वोच्च नेता मुज्तबा खामेनेई ने पहली बार राष्ट्र को संबोधित करते हुए अमेरिका और इजराइल के खिलाफ कड़ा रुख अपनाया है। अपने संदेश में उन्होंने कहा कि उनके पिता का खून व्यर्थ नहीं जाएगा और उनकी हत्या का बदला अवश्य लिया जाएगा। उन्होंने इसे केवल भावनात्मक प्रतिक्रिया नहीं, बल्कि पूरे राष्ट्र की इच्छा और जिम्मेदारी बताया। उनके इस बयान ने पहले से तनावपूर्ण पश्चिम एशिया की स्थिति को और अधिक संवेदनशील बना दिया है।

राज्य प्रसारित संदेश में मुज्तबा खामेनेई ने कहा कि उनके पिता और अन्य मृतकों के खून का हिसाब लिया जाएगा। उन्होंने कहा कि "शहीदों के खून का बदला लेना केवल एक नारा नहीं, बल्कि राष्ट्र की मांग और हमारा कर्तव्य है।" उन्होंने यह भी संकेत दिया कि ईरान अपने ऊपर हमले के लिए जिम्मेदार लोगों के खिलाफ उचित समय पर कार्रवाई करेगा। हालांकि उन्होंने किसी संभावित सैन्य अभियान का विवरण नहीं दिया, लेकिन उनके बयान को ईरान की भविष्य की रणनीति का स्पष्ट संकेत माना जा रहा है।

मुज्तबा खामेनेई ने अपने संबोधन में कहा कि ईरान अपने नेताओं और नागरिकों के बलिदान को कभी नहीं भूलेगा। उन्होंने दावा किया कि देश की जनता कठिन परिस्थितियों में भी एकजुट होकर खड़ी है और बाहरी दबावों के सामने झुकने वाली नहीं है। उनके अनुसार ईरान की राष्ट्रीय सुरक्षा और संप्रभुता की रक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता रहेगी तथा देश किसी भी प्रकार के हमले का जवाब देने के लिए तैयार है। अपने संदेश में नए सर्वोच्च नेता ने उन लाखों लोगों का भी आभार व्यक्त किया, जिन्होंने अयातुल्ला अली खामेनेई के अंतिम संस्कार में भाग लिया। उन्होंने कहा कि अंतिम विदाई में उमड़ी विशाल भीड़ ने पूरी दुनिया को यह संदेश दिया कि ईरान अपने नेतृत्व और राष्ट्रीय मूल्यों के साथ मजबूती से खड़ा है। उनके अनुसार अंतिम संस्कार में लोगों की अभूतपूर्व भागीदारी ने देश की एकता, राजनीतिक स्थिरता और राष्ट्रीय संकल्प को प्रदर्शित किया है। ईरान में अली खामेनेई के अंतिम संस्कार का आयोजन कई दिनों तक चला, जिसमें देश के विभिन्न हिस्सों से बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए। राजधानी तेहरान से लेकर मशहद तक आयोजित शोक कार्यक्रमों में लाखों नागरिकों ने हिस्सा लिया। अंतिम संस्कार के दौरान सुरक्षा व्यवस्था अभूतपूर्व स्तर पर रखी गई थी। संवेदनशील प्रतिष्ठानों, हवाई क्षेत्रों और सीमावर्ती इलाकों में सुरक्षा बलों की अतिरिक्त तैनाती की गई ताकि किसी भी संभावित खतरे से निपटा जा सके।

रिपोर्टों के अनुसार अयातुल्ला अली खामेनेई को 9 जुलाई को उनके पैतृक शहर मशहद में सुपुर्द-ए-खाक किया गया। अंतिम संस्कार के दौरान पूरे देश में शोक कार्यक्रम आयोजित किए गए और कई सरकारी संस्थानों में विशेष श्रद्धांजलि सभाएं भी हुईं। इस दौरान ईरानी प्रशासन ने राष्ट्रीय सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए सैन्य और सुरक्षा एजेंसियों को सतर्क रहने के निर्देश दिए।

विश्लेषकों का मानना है कि मुज्तबा खामेनेई का यह पहला सार्वजनिक संदेश केवल श्रद्धांजलि तक सीमित नहीं था, बल्कि यह ईरान की भावी विदेश और सुरक्षा नीति का भी संकेत देता है। उन्होंने अपने पिता की विरासत को आगे बढ़ाने का संकल्प दोहराया और स्पष्ट किया कि ईरान क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय दबावों के सामने अपनी रणनीतिक नीतियों से पीछे नहीं हटेगा।

इस घटनाक्रम के बीच अमेरिका और ईरान के बीच तनाव एक बार फिर बढ़ता दिखाई दे रहा है। हाल के महीनों में दोनों देशों के बीच सैन्य टकराव, जवाबी कार्रवाई और संघर्ष विराम को लेकर कई उतार-चढ़ाव देखने को मिले हैं। क्षेत्रीय विशेषज्ञों का मानना है कि नए सर्वोच्च नेता के सख्त बयान के बाद पश्चिम एशिया की सुरक्षा स्थिति पर अंतरराष्ट्रीय समुदाय की निगाहें और अधिक केंद्रित हो सकती हैं।

ईरान और इजराइल के बीच लंबे समय से जारी तनाव भी इस घटनाक्रम के बाद नई दिशा ले सकता है। हालांकि फिलहाल यह स्पष्ट नहीं है कि ईरान किस प्रकार की कार्रवाई करेगा, लेकिन मुज्तबा खामेनेई के बयान ने यह संकेत अवश्य दिया है कि तेहरान अपने शीर्ष नेतृत्व पर हुए हमले को भूला नहीं है और भविष्य की रणनीति में प्रतिशोध की भावना महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी इस बयान पर कड़ी नजर रखी जा रही है। कई देशों के रणनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यदि क्षेत्र में तनाव और बढ़ता है तो इसका प्रभाव ऊर्जा आपूर्ति, समुद्री व्यापार मार्गों और व्यापक क्षेत्रीय सुरक्षा पर पड़ सकता है। ऐसे में आने वाले दिनों में ईरान की सैन्य और कूटनीतिक गतिविधियां पश्चिम एशिया की राजनीति की दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

राम मंदिर ट्रस्ट में नए CEO की तलाश तेज, पारदर्शी चयन प्रक्रिया शुरू चंदा विवाद के बीच प्रशासनिक व्यवस्था को मजबूत करने पर जोर

अयोध्या। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट ने मुख्य कार्यकारी अधिकारी (CEO) के चयन की प्रक्रिया औपचारिक रूप से शुरू कर दी है। यह कदम ऐसे समय उठाया गया है, जब हाल ही में मंदिर से जुड़े चंदे में कथित अनियमितता के आरोपों को लेकर चर्चाएं तेज हैं। ट्रस्ट ने स्पष्ट संकेत दिए हैं कि भविष्य में प्रशासनिक व्यवस्था को और अधिक पारदर्शी, जवाबदेह तथा सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से योग्य और अनुभवी अधिकारी की नियुक्ति की जाएगी। इसी दिशा में गठित तीन सदस्यीय सर्च कमेटी ने शनिवार को नई दिल्ली में अपनी पहली बैठक आयोजित कर चयन प्रक्रिया की रूपरेखा तय की।

ट्रस्ट की ओर से गठित इस सर्च कमेटी में जम्मू-कश्मीर एवं पंजाब-हरियाणा हाईकोर्ट के पूर्व मुख्य न्यायाधीश जस्टिस (सेवानिवृत्त) प्रमोद कोहली, भारतीय सेना के लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) विष्णुकांत चतुर्वेदी तथा श्री साईंबाबा संस्थान ट्रस्ट के पूर्व अध्यक्ष सुरेश हावड़े को शामिल किया गया है। समिति को ऐसे व्यक्ति की तलाश की जिम्मेदारी सौंपी गई है, जो प्रशासनिक क्षमता, वित्तीय प्रबंधन, धार्मिक संस्थानों के संचालन और संगठनात्मक नेतृत्व का व्यापक अनुभव रखता हो।

सूत्रों के अनुसार पहली बैठक में मुख्य कार्यकारी अधिकारी के पद के लिए पात्रता, अनुभव, चयन प्रक्रिया और नियुक्ति की शर्तों पर विस्तार से चर्चा की गई। समिति ने इस बात पर सहमति बनाई कि पद की जिम्मेदारियों को देखते हुए उम्मीदवार का प्रशासनिक दृष्टिकोण मजबूत होना चाहिए और वह बड़े स्तर पर संस्थागत कार्यों का संचालन करने में सक्षम हो। इसी कारण न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता स्नातक निर्धारित की गई है। इसके साथ ही प्रशासन, वित्तीय प्रबंधन, सार्वजनिक संस्थान अथवा बड़े संगठन के संचालन में कम से कम 20 वर्षों का अनुभव अनिवार्य रखा गया है। जिन उम्मीदवारों के पास मंदिर प्रबंधन, धार्मिक ट्रस्टों या बड़े आध्यात्मिक संस्थानों के संचालन का अनुभव होगा, उन्हें चयन प्रक्रिया में प्राथमिकता मिलने की संभावना है।

ट्रस्ट ने स्पष्ट किया है कि मुख्य कार्यकारी अधिकारी का पद केवल प्रशासनिक जिम्मेदारी तक सीमित नहीं होगा, बल्कि मंदिर परिसर के संचालन, श्रद्धालुओं के लिए उपलब्ध सुविधाओं, वित्तीय पारदर्शिता, विभिन्न परियोजनाओं की निगरानी, ट्रस्ट के दैनिक कार्यों के समन्वय और भविष्य की विकास योजनाओं के क्रियान्वयन में भी उसकी महत्वपूर्ण भूमिका होगी। यही कारण है कि चयन प्रक्रिया को पूरी तरह व्यवस्थित और योग्यता आधारित बनाने पर विशेष जोर दिया जा रहा है।

निर्धारित मानदंडों के अनुसार आवेदन करने वाला अभ्यर्थी हिंदू धर्म का अनुयायी होना चाहिए। ट्रस्ट ने आवेदन की अंतिम तिथि 18 जुलाई निर्धारित की है। आवेदन प्राप्त करने के लिए जल्द ही एक अधिकृत ई-मेल आईडी जारी की जाएगी, जिसके माध्यम से इच्छुक उम्मीदवार अपने दस्तावेज और आवेदन भेज सकेंगे। आवेदन प्राप्त होने के बाद सर्च कमेटी सभी अभ्यर्थियों की योग्यता, अनुभव और उपलब्धियों का विस्तृत मूल्यांकन करेगी। इसके बाद चयनित उम्मीदवारों का साक्षात्कार लेकर अंतिम नाम ट्रस्ट के समक्ष अनुमोदन के लिए प्रस्तुत किया जाएगा।

चयनित मुख्य कार्यकारी अधिकारी को अयोध्या में रहकर अपनी सेवाएं देनी होंगी। ट्रस्ट का मानना है कि मंदिर से जुड़े महत्वपूर्ण निर्णयों और दैनिक प्रशासनिक गतिविधियों की प्रभावी निगरानी के लिए अधिकारी का स्थानीय स्तर पर उपलब्ध रहना आवश्यक है। प्रारंभिक नियुक्ति तीन वर्षों के लिए की जाएगी। कार्यकाल के दौरान प्रदर्शन और आवश्यकता के आधार पर आगे की प्रक्रिया तय की जाएगी। चयन प्रक्रिया को व्यवस्थित ढंग से संचालित करने के लिए सर्च कमेटी एक सचिव की भी नियुक्ति करेगी, जो आवेदन प्राप्त करने, दस्तावेजों के परीक्षण और प्रशासनिक समन्वय का कार्य संभालेगा। ट्रस्ट का लक्ष्य अगले लगभग एक महीने के भीतर पूरी चयन प्रक्रिया को अंतिम रूप देना है।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी की नियुक्ति ऐसे समय की जा रही है, जब मंदिर से जुड़े चंदे में कथित हेराफेरी के आरोपों ने ट्रस्ट की कार्यप्रणाली को लेकर कई सवाल खड़े किए हैं। हालांकि जांच प्रक्रिया जारी है, लेकिन ट्रस्ट के वरिष्ठ पदाधिकारियों ने स्पष्ट किया है कि किसी भी प्रकार की वित्तीय अनियमितता को गंभीरता से लिया जाएगा और भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिए संस्थागत व्यवस्थाओं को और अधिक मजबूत बनाया जाएगा।

श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण समिति के अध्यक्ष नृपेंद्र मिश्रा ने इस विषय पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि श्रद्धालुओं द्वारा भगवान श्रीराम के मंदिर निर्माण के लिए दिया गया दान आस्था का प्रतीक है। यदि उस धन के उपयोग में किसी भी स्तर पर गड़बड़ी होती है, तो वह केवल प्रशासनिक त्रुटि नहीं, बल्कि धार्मिक और सामाजिक दृष्टि से भी अत्यंत गंभीर विषय है। उन्होंने कहा कि दान में किसी भी प्रकार की हेराफेरी पूरे समाज के लिए कलंक के समान है और इससे प्रत्येक जिम्मेदार व्यक्ति स्वयं को आहत महसूस करता है।

नृपेंद्र मिश्रा ने कहा कि मामले की जांच निष्पक्ष रूप से कराई जा रही है और जांच में जो भी व्यक्ति दोषी पाया जाएगा, उसके विरुद्ध कानून और नियमों के अनुसार कठोर कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि ट्रस्ट की प्राथमिकता केवल दोषियों की पहचान करना ही नहीं, बल्कि भविष्य में ऐसी किसी भी संभावना को समाप्त करने के लिए मजबूत और पारदर्शी व्यवस्था विकसित करना भी है। इसी उद्देश्य से प्रशासनिक ढांचे को पुनर्गठित करने और अनुभवी मुख्य कार्यकारी अधिकारी की नियुक्ति की प्रक्रिया प्रारंभ की गई है।

उन्होंने यह भी बताया कि श्रीराम मंदिर निर्माण परियोजना अपने अंतिम चरण में पहुंच चुकी है। मंदिर के मुख्य ढांचे का अधिकांश कार्य पूरा हो चुका है और अब शेष तकनीकी तथा धार्मिक व्यवस्थाओं को अंतिम रूप दिया जा रहा है। उन्होंने जानकारी दी कि मंदिर परिसर में स्थापित की जाने वाली 24 घंटे प्रज्ज्वलित रहने वाली अखंड ज्योति की व्यवस्था का कार्य अभी शेष है। इस कार्य को 30 जुलाई तक पूरा करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है, ताकि मंदिर परिसर की सभी प्रमुख व्यवस्थाएं समयबद्ध तरीके से पूर्ण हो सकें।

श्रीराम मंदिर के उद्घाटन के बाद अयोध्या में श्रद्धालुओं की संख्या लगातार बढ़ रही है। प्रतिदिन देश-विदेश से हजारों श्रद्धालु दर्शन के लिए पहुंच रहे हैं। ऐसे में मंदिर प्रशासन के सामने श्रद्धालुओं की सुविधाओं, सुरक्षा व्यवस्था, भीड़ प्रबंधन, वित्तीय संचालन और विभिन्न सेवाओं के बेहतर समन्वय की चुनौती भी बढ़ी है। माना जा रहा है कि नए मुख्य कार्यकारी अधिकारी की नियुक्ति इन सभी व्यवस्थाओं को अधिक व्यवस्थित और पेशेवर ढंग से संचालित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम साबित होगी।

ट्रस्ट के भीतर प्रशासनिक सुधारों और पारदर्शिता को लेकर उठाए जा रहे कदमों पर भी सभी की निगाहें टिकी हैं। चंदा विवाद के बाद शुरू हुई यह चयन प्रक्रिया केवल एक प्रशासनिक नियुक्ति भर नहीं मानी जा रही, बल्कि इसे ट्रस्ट की जवाबदेही, सुशासन और संस्थागत मजबूती की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल के रूप में देखा जा रहा है।

संपादकीय

ज़्यादा अल्कोहल वाली दवाओं का नियमन सराहनीय

सार्वजनिक विमर्श में लंबे समय से मांग की जाती रही है कि ज्यादा अल्कोहल की मात्रा वाली दवाओं का सख्ती से नियमन किया जाए। दरअसल, नशे की लत छुड़ाने के प्रयासों के दौरान इन दवाओं का दुरुपयोग किया जाता रहा है। साथ ही जिन राज्यों में नशाबंदी लागू है, वहां भी उनके गलत इस्तेमाल की शिकायतें मिलती रही हैं। ऐसे में केंद्र सरकार का ज्यादा अल्कोहल की मात्रा वाली पीने वाली दवाइयों व सिरप की बिक्री पर सख्ती करने का फैसला, एक जरूरी सुधार है। निश्चय ही इस कदम से लंबे समय से इन दवाइयों के गलत इस्तेमाल की प्रवृत्ति पर रोक लग सकेगी। दरअसल, 12 प्रतिशत से ज्यादा एथिल अल्कोहल मात्रा के साथ बड़ी बोतल में मिलने वाली दवाइयों के लिये अब लाइसेंस, डॉक्टर की पर्ची और रिकॉर्ड रखने के नियम कड़े करके सरकार ने जरूरी पहल की है। आखिरकार सरकार ने उस सच्चाई को स्वीकार कर लिया है, जिसे रेगुलेटर लंबे समय से नजरअंदाज कर रहे थे। यह हकीकत है कि इन दवाओं का नियमन व निगरानी कायदे की न होने से ये दवाएं नशा करने का जरिया भी बन रही थीं। निश्चित रूप से ये नये नियम मरीजों की दवा तक पहुंच और जन-सुरक्षा के बीच समझदारी भरा संतुलन बनाते हैं। इसका मतलब ये है कि जिन्हें वास्तव में इन दवाइयों की जरूरत है, उन्हें ये दवाइयां डॉक्टर की देखरेख में सहज उपलब्ध हो सकेंगी। वहीं दूसरी ओर इन दवाइयों का दुरुपयोग गलत कार्य के लिये करने वालों की इन तक पहुंच मुश्किल हो जाएगी। निश्चय ही यह वक्त की जरूरत थी क्योंकि किशोर और नशे की लत से जूझ रहे लोग अक्सर ऐसी दवाइयों को शराब के सस्ते विकल्प के तौर पर इस्तेमाल करने लगते हैं। जनमानस में उपचार के लिये आम बोलचाल में प्रचलित शब्द 'दवा-दारू', वास्तव में ऐसे नशेड़ियों के लिये नशे का मौका उपलब्ध कराने का जरिया बन जाता था। इस पर अंकुश लगाना निश्चिय ही स्वागत योग्य कदम है।

दरअसल, एम्स दिल्ली के नेशनल ड्रग डिपेंडेंस ट्रीटमेंट सेंटर ने नशीले पदार्थों की लत छुड़ाने के लिये इलाज करा रहे लोगों के बीच इन दवाइयों व कफ सिरफ आदि के अनुचित इस्तेमाल का पर्याप्त रिकॉर्ड रखा है। इतना ही नहीं, जन स्वास्थ्य से जुड़े कई अंतर्राष्ट्रीय संगठन भी इस बाबत चिंता जाहिर कर चुके हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने तो बाकायदा चेतावनी दी है कि जिन जगहों पर सामान्य शराब महंगी होती है या नशाबंदी लागू होने से आसानी से उपलब्ध नहीं होती है, वहां अधिक अल्कोहल वाली दवाइयों के दुरुपयोग की लगातार संभावना बनी रहती है। जो इस बात की ओर स्पष्ट संकेत करता है कि जैसे-जैसे नशीले पदार्थों के रूप में दवाइयों का दुरुपयोग बढ़ता है, वैसे-वैसे ही नियमों में बदलाव करना अपरिहार्य हो जाता है। बहरहाल, कागजों पर नियम बना देना तो मात्र एक शुरुआत भर है। सबसे जरूरी है कि इन नियमों को सख्ती से लागू किया जाए। साथ ही निगरानी तंत्र को भी मजबूत बनाने की जरूरत है। ऐसे में आवश्यक हो जाता है कि नियमों को तोड़कर दवा के दुरुपयोग की कोशिश करने वालों की निगरानी के लिये ड्रग इंस्पेक्टरों की पर्याप्त संख्या हो। इसके अलावा फार्मेसियों को भी इस बाबत जवाबदेह बनाना जरूरी हो जाता है। जिसके लिये ऐसी दवाइयों की बिक्री के रिकॉर्ड को डिजिटल करना भी आवश्यक है ताकि नियामक तंत्र इनकी बिक्री की निगरानी कर सके। निस्संदेह, डॉक्टरों का भी नैतिक दायित्व है कि वे जरूरतमंद लोगों को ये दवाइयां सोच-समझकर ही लिखें। साथ ही इससे होने वाले खतरों के बारे में भी मरीजों को अवगत कराएं। इन बोतलों पर दवा का लेबल लगाने का अंतिम निष्कर्ष यह नहीं है कि वे पूरी तरह से सुरक्षित हैं। बहरहाल, नियमों में बदलाव सरकार की एक बुनियादी जिम्मेदारी को ही दर्शाता है। जो यह सुनिश्चित करने का प्रयास है कि इलाज के लिए उपयोग होने वाले उत्पादों से लोगों को फायदा ही हो, नुकसान नहीं। निस्संदेह, सरकार ने सही दिशा में कदम उठाया है। अब इस नियम को सख्ती से लागू करने का पक्का इरादा भी दिखाना होगा। यदि ऐसा नहीं हुआ तो इस रोग का पूरा इलाज नहीं हो पायेगा।

सतलुज विवाद पर रवनीत सिंह बिट्टू ने जो सवाल उठाये हैं क्या दिलजीत दोसांझ उनको जवाब देंगे?

> "हम आपको बता दें कि विवाद की शुरुआत तब हुई जब सतलुज ओटीटी पर रिलीज होने के महज दो दिन बाद ही वहां से हटा ली गई। इस कदम के बाद पंजाब के फिल्म जगत, सोशल मीडिया और पंजाब सरकार के कुछ हलकों में यह सवाल उठने लगे कि क्या राजनीतिक दबाव के चलते फिल्म हटाई गई।

पंजाब की राजनीति में एक बार फिर इतिहास, सिनेमा और सियासत आमने सामने खड़े दिखाई दे रहे हैं। अभिनेता और गायक दिलजीत दोसांझ की फिल्म सतलुज को लेकर शुरू हुआ विवाद अब पूरी तरह राजनीतिक बहस में बदल गया है। केंद्रीय मंत्री रवनीत सिंह बिट्टू ने दिलजीत दोसांझ और फिल्म के निर्देशक हनी त्रेहन पर तीखा हमला बोलते हुए आरोप लगाया है कि फिल्म के जरिए पंजाब के उग्रवाद के दौर की केवल एकतरफा तस्वीर पेश की जा रही है और समाज में पुराने जख्मों को फिर से कुरेदने की कोशिश की जा रही है। उन्होंने दो टूक कहा कि केंद्र सरकार का फिल्म को ओटीटी मंच से हटाने में कोई हाथ नहीं है। साथ ही उन्होंने पूरे विवाद को सुनियोजित प्रचार करार दिया। हम आपको बता दें कि विवाद की शुरुआत तब हुई जब सतलुज ओटीटी पर रिलीज होने के महज दो दिन बाद ही वहां से हटा ली गई। इस कदम के बाद पंजाब के फिल्म जगत, सोशल मीडिया और पंजाब सरकार के कुछ हलकों में यह सवाल उठने लगे कि क्या राजनीतिक दबाव के चलते फिल्म हटाई गई। हालांकि रवनीत सिंह बिट्टू ने इन आरोपों को पूरी तरह खारिज करते हुए कहा कि सरकार का ऐसे मंचों पर कोई नियंत्रण नहीं है। उनका दावा है कि फिल्म के निर्माताओं ने स्वयं ही इसे हटाया क्योंकि उन्हें जितना आर्थिक लाभ चाहिए था, वह मिल चुका था। उन्होंने कहा कि जब स्वयं दिलजीत दोसांझ पहले ही यह कह चुके थे कि फिल्म केवल दो तीन दिन के लिए उपलब्ध रहेगी, तभी समझ जाना चाहिए था कि पूरे घटनाक्रम में कुछ न कुछ गड़बड़ है। उन्होंने कहा कि यदि सरकार को फिल्म हटानी ही होती तो उसे प्रसारित होने की अनुमति ही क्यों दी जाती। बिट्टू ने आरोप लगाया कि पहले फिल्म को प्रसारित कर माहौल बनाया गया और फिर उसे हटाकर सरकार पर प्रतिबंध लगाने का

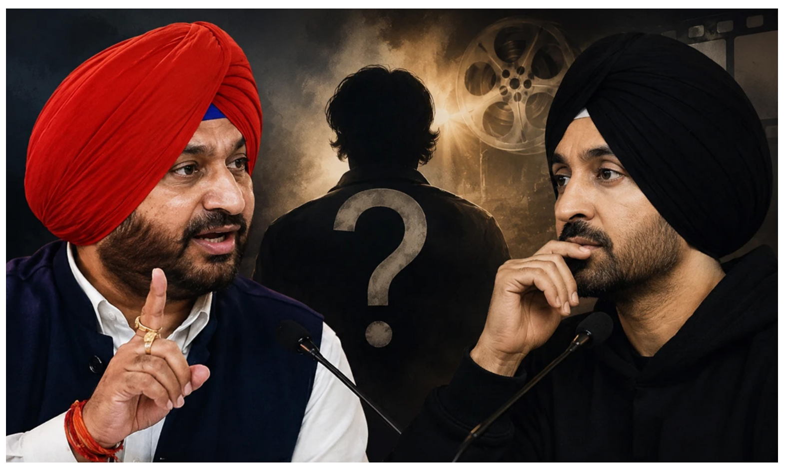

आरोप मढ़ दिया गया।

केंद्रीय मंत्री ने दिलजीत दोसांझ पर केवल इस विवाद तक हमला सीमित नहीं रखा। उन्होंने आरोप लगाया कि दिलजीत केवल धन कमाने के लिए काम करते हैं और विदेश में बैठकर पंजाब के लोगों को भ्रमित कर रहे हैं। उन्होंने उन्हें बहुरूपिया बताते हुए कहा कि वह लॉस एंजिलिस में रहकर पंजाब की भावनाओं से खेल रहे हैं। बिट्टू ने सवाल उठाया कि यदि दिलजीत को समाज और मानवाधिकारों की इतनी चिंता है तो उन्होंने मानवाधिकार कार्यकर्ता जसवंत सिंह खालरा पर फिल्म क्यों नहीं बनाई? उन्होंने फिल्म चमकीला का भी जिक्र करते हुए कहा कि यदि दिलजीत अपने परिवार की महिलाओं का सम्मान करते तो ऐसी फिल्म में काम नहीं करते। उन्होंने यह दावा भी किया कि विदेशों में अपने कार्यक्रमों के दौरान दिलजीत खालिस्तान के झंडे लेकर आने वालों को हटाने की बात करते हैं और फिर सवाल उठाया कि आखिर उनके पीछे कौन-सी ताकतें काम कर रही हैं?

रवनीत सिंह बिट्टू ने स्पष्ट किया कि उन्हें पंजाब में उग्रवाद के दौर पर फिल्म बनने से कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन उनका विरोध केवल एकतरफा कहानी दिखाने को लेकर है। उन्होंने कहा कि यदि उस दौर की कहानी दिखाई जा रही है तो उन पुलिस अधिकारियों, सुरक्षाकर्मियों और निर्दोष नागरिकों के बलिदान को भी सामने लाया जाना चाहिए जिन्होंने आतंकवाद के खिलाफ संघर्ष करते हुए अपने प्राण गंवाए। उन्होंने दिलजीत दोसांझ और हनी त्रेहन को चुनौती देते हुए पूछा कि क्या वह उन पुलिस अधिकारियों और आम नागरिकों पर भी फिल्म बनाएंगे जिनकी 1984 के बाद के दौर में आतंकवादियों ने हत्या कर दी थी। उन्होंने लालड़ू के पास एक सौ पच्चीस यात्रियों के नरसंहार और युवा भारतीय पुलिस सेवा अधिकारी अविंदर सिंह की हत्या जैसी घटनाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि इन परिवारों के दर्द को भी देश के सामने लाया जाना चाहिए।

फिल्म में किए गए उस दावे पर भी केंद्रीय मंत्री ने सवाल उठाया जिसमें पच्चीस हजार अज्ञात शवों के गुप्त तरीके से निपटान की बात कही गई है। उन्होंने कहा कि यदि यह दावा तथ्यात्मक है तो निर्माता उसके प्रमाण सार्वजनिक करें। उन्होंने चुनौती देते हुए कहा कि पच्चीस हजार तो दूर, यदि पांच हजार मामलों का भी पूरा ब्यौरा मीडिया, संबंधित आयोग या न्यायालय के सामने रख दिया जाए तो वह अपनी बात वापस लेने को तैयार हैं। उन्होंने कहा कि तथ्यों के बिना ऐसे गंभीर आरोप समाज में भ्रम और तनाव पैदा करते हैं। अपने परिवार के इतिहास का जिक्र करते हुए रवनीत सिंह बिट्टू ने कहा कि उनके दादा और पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री बेअंत सिंह ने आतंकवाद के कठिन दौर में राज्य में शांति बहाल करने के लिए संघर्ष किया था और इसी दौरान उनकी हत्या कर दी गई थी। उन्होंने कहा कि उस समय पंजाब में भय का ऐसा माहौल था कि सामान्य सामाजिक जीवन भी प्रभावित हो गया था। विवाह समारोहों से लेकर महिलाओं के पहनावे तक पर आतंक का साया था। उन्होंने उस दौर की तुलना कट्टर शासन से करते हुए कहा कि आज की शांति बहुत कठिन संघर्ष के बाद मिली है और इसे केवल फिल्म की कमाई या राजनीतिक लाभ के लिए दांव पर नहीं लगाया जाना चाहिए।

उन्होंने यह भी कहा कि फिल्म में घटनाक्रम की समयरेखा को लेकर गंभीर सवाल हैं। उन्होंने कहा कि जसवंत सिंह खालरा के लापता होने की घटना उनके दादा की हत्या के बाद हुई थी और उस समय पंजाब में कांग्रेस की सरकार थी। ऐसे में उस पूरे घटनाक्रम की जिम्मेदारी किसकी थी, इस पर भी सवाल उठना चाहिए। उन्होंने अकाली दल पर भी निशाना साधते हुए आरोप लगाया कि गांवों और गुरुद्वारों में फिल्म का प्रदर्शन कर राजनीतिक लाभ लेने की कोशिश की जा रही है। उन्होंने दावा किया कि जसवंत सिंह खालरा की पत्नी ने पूर्व मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल पर भी गंभीर आरोप लगाए थे, जिनकी चर्चा आज नहीं की जाती।

साथ ही रवनीत सिंह बिट्टू ने सोशल मीडिया पर भी अपनी बात विस्तार से रखते हुए कहा कि इतिहास की केवल एक तरफा नहीं, बल्कि पूरी सच्चाई को जानना जरूरी है। उन्होंने लिखा कि पंजाब ने अपने निर्दोष लोगों के बलिदान के साथ जो असहनीय पीड़ा झेली है, उसे भुलाया नहीं जा सकता। उनका कहना था कि हर पीड़ित को याद किया जाना चाहिए और हर पीड़ित को न्याय मिलना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि स्थायी और वास्तविक शांति केवल सत्य के मार्ग पर चलकर ही प्राप्त की जा सकती है। बिट्टू के अनुसार यदि इतिहास के केवल एक हिस्से को दिखाया जाएगा और दूसरे पक्ष के दर्द तथा बलिदान को नजरअंदाज किया जाएगा तो समाज में संतुलित विमर्श कभी स्थापित नहीं हो सकेगा। उनका कहना है कि पंजाब के उग्रवाद के दौर की कहानी में केवल कुछ घटनाओं या कुछ पात्रों को केंद्र में रखना न्यायसंगत नहीं है, बल्कि उन हजारों निर्दोष परिवारों, पुलिसकर्मियों, सुरक्षाबलों और आम नागरिकों के दर्द को भी बराबर महत्व मिलना चाहिए जिन्होंने आतंकवाद की कीमत अपने जीवन से चुकाई।

बहरहाल, फिलहाल सतलुज को लेकर छिड़ा विवाद केवल एक फिल्म तक सीमित नहीं रह गया है। यह बहस अब इतिहास की व्याख्या, राजनीतिक विमर्श, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और पंजाब के उग्रवाद वाले दौर की स्मृतियों तक पहुंच चुकी है। एक पक्ष इसे दबाई गई सच्चाइयों को सामने लाने का प्रयास बता रहा है, जबकि दूसरा पक्ष इसे अधूरी और एकतरफा कहानी के जरिए समाज में विभाजन पैदा करने की कोशिश मान रहा है। ऐसे में यह विवाद आने वाले दिनों में पंजाब की राजनीति और जनचर्चा दोनों के केंद्र में बना रहने के संकेत दे रहा है।

प्रेरणा

हार नहीं, हर असफल प्रयास भविष्य की जीत की नींव रखता है

जीवन की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि अधिकांश लोग सफलता को केवल अंतिम उपलब्धि के रूप में देखते हैं, जबकि सफलता तक पहुंचने वाली सबसे महत्वपूर्ण सीढ़ी असफलता ही होती है। जो व्यक्ति गिरने से डरता है, वह कभी ऊंचाइयों तक नहीं पहुंच पाता। प्रकृति का नियम भी यही है कि हर परिवर्तन समय लेता है। बीज को वृक्ष बनने में वर्षों लगते हैं, नदी को अपना मार्ग बनाने में अनगिनत बाधाओं का सामना करना पड़ता है और सूर्य भी हर दिन अंधकार को धीरे-धीरे हटाकर ही प्रकाश फैलाता है। मनुष्य का जीवन भी इसी नियम पर चलता है। जो व्यक्ति कठिनाइयों, असफलताओं और संघर्षों को स्वीकार करके आगे बढ़ता है, वही अंततः अपने लक्ष्य तक पहुंचता है। ्राचीन भारत के महान चिंतक, अर्थशास्त्री और नीति-निर्माता आचार्य चाणक्य अपने समय के ऐसे गुरु थे, जो केवल शास्त्रों का ज्ञान ही नहीं देते थे, बल्कि जीवन की हर चुनौती का व्यावहारिक समाधान भी अपने शिष्यों को सिखाते थे। उनके लिए शिक्षा का अर्थ केवल परीक्षा में सफलता प्राप्त करना नहीं था, बल्कि ऐसा व्यक्तित्व तैयार करना था जो विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य, विवेक और आत्मविश्वास बनाए रख सके। उनकी शिक्षाओं में आज भी उतनी ही प्रासंगिकता है जितनी हजारों वर्ष पहले थी।

एक दिन तक्षशिला विश्वविद्यालय का एक प्रतिभाशाली छात्र अत्यंत निराश होकर आचार्य चाणक्य के पास पहुंचा। उसकी आंखों में चिंता थी और मन में असफलताओं का बोझ। उसने विनम्र स्वर में कहा, "आचार्य, मैं पूरी निष्ठा के साथ अध्ययन करता हूं। अपने प्रत्येक कार्य में परिश्रम करता हूं, फिर भी मुझे वह सफलता नहीं मिल रही जिसकी मुझे अपेक्षा है। मेरे साथ पढ़ने वाले कई विद्यार्थी आगे निकल रहे हैं, जबकि मैं बार-बार पीछे रह जाता हूं। अब तो ऐसा लगने लगा है कि शायद मैं योग्य ही नहीं हूं।"

चाणक्य ने छात्र की पूरी बात बिना बीच में टोके सुनी। उन्होंने उसके चेहरे पर फैली हताशा को ध्यान से देखा, लेकिन तुरंत कोई उत्तर नहीं दिया। कुछ क्षणों की शांति के बाद उन्होंने मुस्कुराते हुए एक सरल प्रश्न पूछा, "यदि कोई किसान अपने खेत में बीज बोता है, तो क्या वह प्रतिदिन मिट्टी हटाकर यह देखता है कि बीज अंकुरित हुआ या नहीं?"

छात्र ने तुरंत उत्तर दिया, "नहीं आचार्य। यदि किसान ऐसा करेगा तो बीज नष्ट हो जाएगा। अंकुर बनने की प्रक्रिया रुक जाएगी।"

चाणक्य ने गंभीर स्वर में कहा, "यही गलती तुम अपने जीवन में कर रहे हो। तुम प्रत्येक प्रयास के तुरंत बाद परिणाम देखने की बेचैनी में अपने विश्वास को ही कमजोर कर देते हो। हर दिन स्वयं से यह पूछना कि सफलता क्यों नहीं मिली, ठीक वैसा ही है जैसे बीज को बार-बार खोदकर उसकी प्रगति देखने का प्रयास करना। जिस प्रकार बीज को समय, धैर्य और अनुकूल वातावरण चाहिए, उसी प्रकार मनुष्य के प्रयासों को भी समय और विश्वास की आवश्यकता होती है।"

छात्र अब पूरी एकाग्रता से अपने गुरु की बातें सुन रहा था। उसकी आंखों में निराशा की जगह जिज्ञासा दिखाई देने लगी। चाणक्य ने आगे कहा, "दुनिया में कोई भी महान उपलब्धि एक दिन में प्राप्त नहीं होती। हर सफलता के पीछे लंबे समय तक किया गया अदृश्य परिश्रम छिपा होता है। लोग केवल परिणाम देखते हैं, लेकिन उस परिणाम तक पहुंचने वाले संघर्ष, असफलताएं और त्याग नहीं देख पाते।"

उन्होंने एक सूखे बीज को हाथ में उठाया और छात्र को दिखाते हुए कहा, "जब यह बीज मिट्टी में दबता है, तब बाहर से देखने वाला सोच सकता है कि यह समाप्त हो गया है। लेकिन वास्तव में उसी अंधकार में उसका नया जीवन आरंभ होता है। यदि वह बीज अंधेरे और दबाव से घबराकर अपनी यात्रा छोड़ दे, तो वह कभी वृक्ष नहीं बन पाएगा। मनुष्य भी बिल्कुल ऐसा ही है। कठिन समय उसके विनाश का नहीं, बल्कि उसके निर्माण का समय होता है।"

छात्र ने विनम्रता से पूछा, "आचार्य, यदि बार-बार असफलता मिले तो मन में विश्वास कैसे बनाए रखें?"

चाणक्य ने उत्तर दिया, "असफलता तुम्हें रोकने नहीं आती, बल्कि यह बताने आती है कि अभी सीखने के लिए कुछ शेष है। यदि हर प्रयास पहली बार में सफल हो जाए, तो अनुभव, धैर्य और परिपक्वता का जन्म ही नहीं होगा। इसलिए बुद्धिमान व्यक्ति असफलता से निराश नहीं होता, बल्कि उससे सीखकर अपने अगले प्रयास को और अधिक मजबूत बनाता है।"

उन्होंने आगे कहा, "सफलता केवल प्रतिभा से नहीं मिलती। प्रतिभा के साथ धैर्य, अनुशासन और निरंतरता भी आवश्यक है। अनेक लोग प्रतिभाशाली होते हुए भी केवल इसलिए पीछे रह जाते हैं क्योंकि वे समय से पहले हार मान लेते हैं। दूसरी ओर साधारण क्षमता वाला व्यक्ति यदि लगातार प्रयास करता रहे, तो वह असाधारण उपलब्धियां प्राप्त कर सकता है।"

इन शब्दों ने छात्र के भीतर नई ऊर्जा का संचार कर दिया। उसे महसूस हुआ कि उसकी सबसे बड़ी कमजोरी परिश्रम की कमी नहीं, बल्कि परिणामों की जल्दबाजी थी। वह हर छोटी बाधा को अपनी अंतिम हार समझ बैठता था। उसने गुरु के चरणों में प्रणाम करते हुए कहा, "आचार्य, आज मुझे समझ में आ गया कि असफलता मेरे मार्ग की रुकावट नहीं, बल्कि मेरी तैयारी का हिस्सा है।"

चाणक्य ने स्नेहपूर्वक उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, "अपने कर्म पर ध्यान दो, परिणाम पर नहीं। समय स्वयं तय करेगा कि तुम्हारी मेहनत कब फल देगी। प्रकृति कभी जल्दबाजी नहीं करती, फिर भी उसके प्रत्येक कार्य पूर्ण होते हैं।"

यह प्रसंग केवल उस छात्र के लिए नहीं, बल्कि हर उस व्यक्ति के लिए प्रेरणा है जो जीवन में कभी निराश हुआ है। वर्तमान समय में लोग त्वरित सफलता के इतने अभ्यस्त हो चुके हैं कि थोड़ी-सी देरी भी उन्हें असफलता प्रतीत होने लगती है। प्रतियोगी परीक्षाओं में असफल होने वाला विद्यार्थी, व्यवसाय में घाटा झेलने वाला व्यापारी, नौकरी की तलाश में संघर्ष कर रहा युवा या किसी लक्ष्य को पाने के लिए लगातार प्रयास कर रहा व्यक्ति—सभी के जीवन में ऐसे क्षण आते हैं जब उन्हें लगता है कि उनकी मेहनत व्यर्थ जा रही है। लेकिन वास्तविकता यह है कि कोई भी ईमानदार प्रयास कभी व्यर्थ नहीं जाता। वह किसी न किसी रूप में व्यक्ति को अधिक सक्षम, अधिक अनुभवी और अधिक मजबूत बनाता है।

इतिहास के प्रत्येक महान व्यक्ति की यात्रा इस सत्य की पुष्टि करती है। जिन्होंने संसार को नई दिशा दी, वे कभी न कभी असफल हुए थे। अंतर केवल इतना था कि उन्होंने अपनी असफलताओं को अपनी पहचान नहीं बनने दिया। उन्होंने उन्हें सीख में बदला और फिर उसी अनुभव के आधार पर नई सफलता का निर्माण किया। यही कारण है कि उनका संघर्ष आज भी प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है।

PM Modi ने दस सालों में Indian Navy को कहां से कहां पहुँचा दिया, समुद्र की लहरों पर दौड़ती भारतीय शक्ति को पूरी दुनिया सलाम करती है

भारतीय नौसेना की युद्धक क्षमता को नई ऊंचाई देते हुए रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने विशाखापत्तनम में स्वदेशी स्टील्थ युद्धपोत आईएनएस महेंद्रगिरि को पूर्वी बेड़े में शामिल किया। प्रोजेक्ट सत्रह ए के तहत निर्मित यह छठा और अंतिम स्टील्थ युद्धपोत सिर्फ एक नया जहाज नहीं, बल्कि समुद्री शक्ति, स्वदेशी रक्षा निर्माण और सामरिक आत्मनिर्भरता का सशक्त प्रतीक है। महेंद्रगिरि के नौसेना में शामिल होने के साथ ही भारत ने स्पष्ट संदेश दिया है कि वह केवल अपनी समुद्री सीमाओं की रक्षा तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि दूरस्थ समुद्री क्षेत्रों में भी अपने हितों की प्रभावी सुरक्षा करने में पूरी तरह सक्षम है। हम आपको बता दें कि करीब छह हजार छह सौ सत्तर टन वजन और अट्ठाइस नॉट की अधिकतम गति वाला यह बहुउद्देशीय युद्धपोत आधुनिक समुद्री युद्ध की हर चुनौती से निपटने के लिए तैयार किया गया है। इसमें रडार पर कम दिखाई देने वाली स्टील्थ क्षमता, अत्याधुनिक स्वचालित प्रणालियां, हमलों को झेलने की बेहतर क्षमता और पचहत्तर प्रतिशत से अधिक स्वदेशी उपकरण लगाए गए हैं। इसे ब्रह्मोस प्रहारक मिसाइल, लंबी दूरी की वायु रक्षा प्रणाली, बहुउद्देशीय रडार, पनडुब्बी रोधी रक्षा प्रणाली, टारपीडो प्रक्षेपक, स्वदेशी रॉकेट प्रक्षेपक तथा उन्नत इलेक्ट्रॉनिक युद्ध प्रणाली से लैस किया गया है। यही कारण है कि यह हवा, समुद्र की सतह और समुद्र के भीतर छिपे दुश्मनों पर एक साथ प्रभावी प्रहार करने में सक्षम है।

हम आपको बता दें कि महेंद्रगिरि को ब्लू वाटर युद्धपोत की श्रेणी में रखा गया है। इसका अर्थ है कि यह केवल तटीय सुरक्षा तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि हजारों किलोमीटर दूर गहरे समुद्र में कई सप्ताह तक लगातार अभियान चलाने की क्षमता रखता है। खोज और बचाव अभियान, मानवीय सहायता, आपदा राहत, समुद्री सुरक्षा तथा हिंद महासागर क्षेत्र में लंबी तैनाती जैसे दायित्व भी यह समान दक्षता से निभा सकता है। पूर्वी घाट की महेंद्रगिरि पर्वतमाला के नाम पर रखे गए इस युद्धपोत के प्रतीक चिह्न में दर्शाया गया शिकरा पैनी दृष्टि, धैर्य और निर्णायक प्रहार का प्रतीक है, जो इसकी युद्धक भूमिका को भी प्रतिबिंबित करता है।

इतिहास

देखा जाये तो महेंद्रगिरि का सामरिक महत्व केवल इसकी मारक क्षमता तक सीमित नहीं है। हिंद महासागर आज विश्व व्यापार, ऊर्जा आपूर्ति और सामरिक प्रतिस्पर्धा का सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र बन चुका है। ऐसे समय में भारत के पास जितने अधिक आधुनिक और दूर तक अभियान चलाने वाले युद्धपोत होंगे, उतनी ही मजबूत उसकी समुद्री प्रतिरोधक क्षमता होगी। यह युद्धपोत समुद्री व्यापार मार्गों की सुरक्षा, शत्रु की गतिविधियों पर निगरानी, पनडुब्बियों की खोज और आवश्यकता पड़ने पर त्वरित जवाबी कार्रवाई में निर्णायक भूमिका निभाएगा। इससे हिंद महासागर और हिंद प्रशांत क्षेत्र में भारत की स्थिति एक भरोसेमंद सुरक्षा साझेदार के रूप में और मजबूत होगी। हम आपको यह भी बता दें कि हाल के महीनों में भारतीय नौसेना का विस्तार अभूतपूर्व गति से हुआ है। 21 जून 2026 को एक साथ तीन महत्वपूर्ण पोत नौसेना में शामिल किए गए थे। इनमें आईएनएस दुनागिरि स्टील्थ युद्धपोत, आईएनएस संशोधक गहरे समुद्र का सर्वेक्षण पोत और आईएनएस अग्रय पनडुब्बी रोधी युद्धपोत शामिल हैं। इसके पहले 31 मार्च 2026 को आईएनएस मालवन को शामिल किया गया, जबकि साल 2025 में बहुउद्देशीय स्टील्थ युद्धपोत आईएनएस तमाल भी नौसेना का हिस्सा बना। अब महेंद्रगिरि के शामिल होने से भारतीय नौसेना की मारक क्षमता, निगरानी शक्ति और समुद्री उपस्थिति पहले से कहीं अधिक सुदृढ़ हो गई है।

यदि दस वर्ष पहले की तुलना करें तो भारतीय नौसेना में उल्लेखनीय परिवर्तन दिखाई देता है। तब अधिकांश प्रमुख युद्धपोतों और हथियार प्रणालियों के लिए विदेशी निर्भरता अधिक थी, जबकि आज स्वदेशी डिजाइन, निर्माण और अत्याधुनिक हथियारों से लैस युद्धपोत तेजी से बेड़े में शामिल हो रहे हैं। विमानवाहक पोत, आधुनिक विध्वंसक, स्टील्थ युद्धपोत, पनडुब्बी रोधी पोत, सर्वेक्षण पोत, उन्नत प्रहारक मिसाइल और स्वदेशी रक्षा प्रणालियों ने नौसेना की शक्ति को कई गुना बढ़ा दिया है। इस तरह अब भारत केवल समुद्री सुरक्षा करने वाला देश नहीं, बल्कि पूरे क्षेत्र में शक्ति संतुलन बनाए रखने वाली महत्वपूर्ण समुद्री ताकत के रूप में उभर चुका है।

साथ ही महेंद्रगिरि का नौसेना में शामिल होना इस बात का प्रमाण है कि आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना अब केवल नारा नहीं, बल्कि समुद्र की लहरों पर दौड़ती वास्तविक शक्ति बन चुकी है। यह युद्धपोत आने वाले वर्षों में भारत की समुद्री सुरक्षा का मजबूत प्रहरी बनने के साथ साथ स्वदेशी रक्षा निर्माण की सफलता का भी सबसे प्रभावशाली उदाहरण साबित होगा।

अभियान

रहस्यों, आस्था और अद्भुत परंपराओं का संगम है श्रीजगन्नाथ धाम, सदियों से दुनिया को चकित कर रहे हैं पुरी मंदिर के अनसुलझे रहस्य

भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत में कुछ ऐसे तीर्थस्थल हैं, जिनके प्रति श्रद्धा केवल धार्मिक विश्वास तक सीमित नहीं है, बल्कि उनकी परंपराएं, स्थापत्य कला और उनसे जुड़े रहस्य भी लोगों को आकर्षित करते हैं। ओडिशा के पुरी में स्थित भगवान श्रीजगन्नाथ का पावन धाम ऐसा ही एक दिव्य तीर्थ है, जिसे हिंदू धर्म के चार प्रमुख धामों में विशेष स्थान प्राप्त है। इसे धरती का वैकुंठ भी कहा जाता है। हर वर्ष करोड़ों श्रद्धालु यहां भगवान श्रीजगन्नाथ, उनके बड़े भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा के दर्शन के लिए पहुंचते हैं। समुद्र तट पर स्थित यह विशाल मंदिर केवल आस्था का केंद्र ही नहीं, बल्कि वास्तुकला, इतिहास, परंपराओं और अनसुलझे रहस्यों का अद्भुत संगम भी माना जाता है। यही कारण है कि सदियों बाद भी श्रीजगन्नाथ मंदिर को लेकर लोगों की जिज्ञासा बनी हुई है।

मान्यता है कि भगवान श्रीजगन्नाथ, भगवान श्रीकृष्ण का ही एक विशेष स्वरूप हैं। मंदिर के गर्भगृह में भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और देवी सुभद्रा की काष्ठ निर्मित प्रतिमाएं विराजमान हैं। दुनिया के अधिकांश मंदिरों में पत्थर या धातु की मूर्तियां स्थापित होती हैं, लेकिन पुरी के जगन्नाथ मंदिर की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहां भगवान की प्रतिमाएं नीम की पवित्र लकड़ी से बनाई जाती हैं। इन्हें निश्चित अवधि के बाद विशेष धार्मिक अनुष्ठान के माध्यम से बदला जाता है। इस प्रक्रिया को नवकलेवर कहा जाता है। सामान्यतः यह आयोजन 12 से 19 वर्ष के बीच उस वर्ष होता है, जब आषाढ़ महीने में अधिक मास पड़ता है। पुराने विग्रहों से दिव्य तत्व को नए विग्रहों में स्थापित करने की परंपरा विश्व की सबसे अद्भुत धार्मिक प्रक्रियाओं में गिनी जाती है। भगवान जगन्नाथ की अधूरी प्रतीत होने वाली प्रतिमाओं के पीछे भी एक अत्यंत प्रसिद्ध धार्मिक कथा प्रचलित है। मान्यता के अनुसार मालवा के राजा इंद्रद्युम्न भगवान विष्णु के दिव्य स्वरूप की स्थापना करना चाहते थे। उन्होंने देव शिल्पी भगवान विश्वकर्मा से प्रतिमाओं के निर्माण का अनुरोध किया। विश्वकर्मा ने एक शर्त रखी कि वे बंद कक्ष में बिना किसी व्यवधान के मूर्तियों का निर्माण करेंगे और जब तक कार्य पूरा न हो जाए, कोई भी द्वार नहीं खोलेगा। कई दिनों तक भीतर से कोई आवाज न आने पर राजा और रानी चिंतित हो उठे। उत्सुकतावश उन्होंने निर्धारित समय से पहले द्वार खोल दिया। जैसे ही द्वार खुला, भगवान विश्वकर्मा वहां से अंतर्ध्यान हो गए और प्रतिमाएं अधूरी अवस्था में ही रह गईं। धार्मिक मान्यता है कि भगवान ने स्वयं इसी स्वरूप में विराजमान रहने की इच्छा व्यक्त की, इसलिए आज भी अधूरी भुजाओं और विशिष्ट आकृति वाली इन्हीं प्रतिमाओं की पूजा की जाती है। पुरी धाम की सबसे प्रसिद्ध परंपरा विश्वविख्यात रथ यात्रा है। प्रत्येक वर्ष आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और देवी सुभद्रा भव्य रथों पर सवार होकर मुख्य मंदिर से गुंडिचा मंदिर तक यात्रा करते हैं। इसे भगवान की अपनी मौसी के घर की यात्रा भी कहा जाता है। लाखों श्रद्धालु विशाल रस्सियों से रथ खींचने का सौभाग्य प्राप्त करने के लिए दूर-दूर से पुरी पहुंचते हैं। धार्मिक मान्यता है कि रथ की रस्सी को स्पर्श करना भी अत्यंत पुण्यदायी माना जाता है। नौ दिनों तक गुंडिचा मंदिर में विराजमान रहने के बाद भगवान पुनः मुख्य मंदिर लौटते हैं, जिसे बहुदा यात्रा कहा जाता है। यह उत्सव केवल भारत ही नहीं, बल्कि दुनिया के अनेक देशों में भी श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया जाता है।श्रीजगन्नाथ मंदिर के शिखर पर स्थापित विशाल सुदर्शन चक्र भी अपने आप में एक अनूठा आश्चर्य माना जाता है। लगभग 20 फीट ऊंचा और कई टन वजनी यह धातु का चक्र मंदिर की सबसे ऊंची चोटी पर स्थापित है। श्रद्धालुओं का कहना है कि आप पुरी शहर में किसी भी दिशा में खड़े होकर इसे देखें, ऐसा प्रतीत होता है जैसे चक्र आपकी ओर ही मुख किए हुए है। इस विशेष दृश्य प्रभाव ने सदियों से लोगों को आश्चर्यचकित किया है। धार्मिक दृष्टि से सुदर्शन चक्र भगवान विष्णु की दिव्य शक्ति और धर्म की रक्षा का प्रतीक माना जाता है। मंदिर के शिखर पर प्रतिदिन बदला जाने वाला ध्वज भी श्रद्धालुओं के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र है। कई सौ फीट ऊंचाई पर बिना किसी आधुनिक सुरक्षा उपकरण के प्रशिक्षित सेवायत प्रतिदिन मंदिर के शिखर पर चढ़कर नया ध्वज स्थापित करते हैं। यह परंपरा सदियों से बिना किसी व्यवधान के चली आ रही है। लोकमान्यता है कि यदि किसी दिन ध्वज परिवर्तन न हो, तो मंदिर को कुछ समय के लिए बंद करना पड़ सकता है। ध्वज को लेकर यह भी प्रसिद्ध मान्यता है कि वह हवा की दिशा के विपरीत लहराता हुआ दिखाई देता है। हालांकि वैज्ञानिक दृष्टि से इसे लेकर अलग-अलग मत हैं, लेकिन श्रद्धालुओं के लिए यह भगवान की दिव्य लीला का प्रतीक माना जाता है। जगन्नाथ मंदिर की विशाल रसोई विश्व की सबसे बड़ी मंदिर रसोइयों में गिनी जाती है। यहां प्रतिदिन हजारों श्रद्धालुओं के लिए महाप्रसाद तैयार किया जाता है। विशेष बात यह है कि भोजन आज भी पारंपरिक मिट्टी के बर्तनों में लकड़ी की आग पर पकाया जाता है। रसोई में एक के ऊपर एक कई मिट्टी के बर्तन रखे जाते हैं और आश्चर्यजनक रूप से सबसे ऊपर रखा हुआ बर्तन पहले पक जाता है, जबकि सबसे नीचे रखा बर्तन सबसे बाद में पकता है। यह परंपरा वर्षों से चली आ रही है और इसे श्रद्धालु भगवान की विशेष कृपा मानते हैं।

मंदिर में तैयार होने वाला महाप्रसाद केवल भोजन नहीं, बल्कि भगवान का प्रसाद माना जाता है। यहां छप्पन भोग सहित अनेक प्रकार के व्यंजन बनाए जाते हैं। यह भी प्रसिद्ध मान्यता है कि चाहे श्रद्धालुओं की संख्या कितनी भी अधिक क्यों न हो, महाप्रसाद कभी कम नहीं पड़ता। वहीं मंदिर के पट बंद होने तक प्रसाद पूरी तरह वितरित हो जाता है और भोजन व्यर्थ नहीं जाता। श्रद्धालु इसे माता अन्नपूर्णा और माता लक्ष्मी की कृपा का प्रत्यक्ष प्रमाण मानते हैं। मंदिर की रसोई में सेवा करने वाले सैकड़ों रसोइये पीढ़ियों से इसी परंपरा का निर्वहन करते आ रहे हैं।

श्रीजगन्नाथ मंदिर से जुड़ा एक और लोकप्रिय रहस्य यह है कि मंदिर के ऊपर पक्षी उड़ते हुए दिखाई नहीं देते। स्थानीय लोगों का कहना है कि मंदिर के शिखर के ऊपर पक्षियों का बैठना या उड़ना अत्यंत दुर्लभ माना जाता है। इसी प्रकार यह भी कहा जाता है कि मंदिर के ऊपर से किसी विमान का नियमित मार्ग नहीं बनाया गया है। इन मान्यताओं को लेकर समय-समय पर अलग-अलग चर्चाएं होती रही हैं। हालांकि विमान मार्गों का निर्धारण नागरिक उड्डयन के नियमों और सुरक्षा मानकों के अनुसार होता है तथा पक्षियों से जुड़ी मान्यता के वैज्ञानिक प्रमाण स्पष्ट रूप से उपलब्ध नहीं हैं, फिर भी यह विषय श्रद्धालुओं और पर्यटकों के बीच हमेशा आकर्षण का केंद्र बना रहता है।

मंदिर के संबंध में एक और लोकप्रिय धारणा यह भी है कि इसकी परछाई स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं देती। वास्तव में मंदिर की विशाल संरचना, ऊंचाई, आसपास की इमारतों, सूर्य की दिशा और प्रकाश के कोण के कारण सामान्य दृष्टि से इसकी छाया स्पष्ट रूप में देख पाना कठिन होता है। समय के साथ यह बात एक रहस्य के रूप में प्रसिद्ध हो गई। इसी प्रकार मंदिर के सिंहद्वार के भीतर प्रवेश करते ही समुद्र की लहरों की आवाज कम सुनाई देने और बाहर निकलते ही पुनः स्पष्ट सुनाई देने की मान्यता भी श्रद्धालुओं के बीच अत्यंत लोकप्रिय है।

श्रीजगन्नाथ मंदिर केवल धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि भारतीय स्थापत्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण भी है। लगभग 65 मीटर ऊंचा इसका शिखर दूर से ही दिखाई देता है। मंदिर का निर्माण कलिंग शैली की वास्तुकला में किया गया है, जिसमें विशाल पत्थरों की जटिल नक्काशी, भव्य प्रवेश द्वार और अलौकिक शिल्पकला आज भी लोगों को मंत्रमुग्ध कर देती है। सदियों पहले बिना आधुनिक तकनीक के निर्मित यह मंदिर भारतीय शिल्पकारों की अद्भुत प्रतिभा का प्रमाण है।

जगन्नाथ धाम की परंपराएं केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं हैं, बल्कि यहां सेवा की एक अनूठी व्यवस्था भी है। मंदिर में विभिन्न सेवाओं के लिए अलग-अलग परिवार पीढ़ियों से अपनी जिम्मेदारियां निभाते आ रहे हैं। कोई भगवान के वस्त्रों की सेवा करता है, कोई भोग तैयार करता है, कोई रथ निर्माण में योगदान देता है तो कोई दैनिक पूजा-अर्चना की व्यवस्था संभालता है। यह परंपरा भारतीय संस्कृति में गुरु-शिष्य और परिवार आधारित सेवा व्यवस्था का जीवंत उदाहरण मानी जाती है।

आज भी पुरी का श्रीजगन्नाथ धाम करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था का सबसे बड़ा केंद्र बना हुआ है। यहां आने वाला प्रत्येक व्यक्ति केवल मंदिर के दर्शन ही नहीं करता, बल्कि सदियों से चली आ रही उन परंपराओं, रहस्यों और आध्यात्मिक अनुभवों को भी महसूस करता है, जिन्होंने इस धाम को विश्वभर में अद्वितीय पहचान दिलाई है।

PRGI NO. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA
Regd.Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424 Gujarat,India. Phone : (o) 7698333307 (M) 8485951747,7096333307
Email:navsarjansanskruti2016@gmail.com*navsarjansanskruti2016@yahoo.com*Website : www.navsarjansanskruti.com

श्री अमित शाह के 'हरियाली लोकसभा' प्रोजेक्ट के तहत बड़े पैमाने पर स्थानीय प्रजातियों के पेड़-पौधे लगाए जाएंगे

- विभिन्न प्रजातियों के पशु-पक्षियों, तितलियों और कीटों को आकर्षित करने वाले स्थानीय प्रजातियों के पेड़-पौधे लगाने से गांधीनगर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र में 'बसंत' वापस आएगा
- केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह द्वारा उनके गांधीनगर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र में इस वर्ष सवा करोड़ (1.25 crore) से अधिक वृक्ष-पौधे लगाने के लिए अभियान शुरू किया गया है और गांधीनगर को देश का एक मॉडल लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र बनाने का संकल्प किया गया है।
- जलवायु परिवर्तन के कारण समग्र दुनिया प्रभावित हुई है। इस परिवर्तन से लड़ने के लिए केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने पेड़ लगाने का देश का सबसे बड़ा अभियान शुरू किया है।
- गांधीनगर हरियाली लोकसभा प्रोजेक्ट के हिस्से के रूप में गुजरात वन विभाग की 82 साइटों पर लगाए जा रहे लगभग 60 लाख पौधों में से 6.05 लाख से अधिक पौधे 24 दुर्लभ, संकटग्रस्त और विलुप्तप्राय देसी प्रजातियों के हैं।

गांधीनगर, 11 जुलाई : कुछ दिन पहले यदि आप बगोदरा से नल सरोवर की ओर जाने वाले मार्ग पर स्थित कणोतर गाँव की 35 हेक्टेयर गौचर भूमि के बगल से गुजरे होते, तो बहुत कम लोगों को वहाँ रहने का मन होता, क्योंकि बहुत ही क्षारयुक्त तथा जंगली बबूल से घिरी हुई यह भूमि उजाड़ जैसी थी। हालाँकि आज इस स्थल से गुजरने वाला कोई भी व्यक्ति बिना रुके नहीं रह सकता।

केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह के महत्वाकांक्षी 'गांधीनगर हरियाली लोकसभा' अभियान अंतर्गत गुजरात वन विभाग ने इस 25 हेक्टेयर भूमि का कायाकल्प कर दिया है। जंगली बबूल हटाकर, पथरीली और कठोर मिट्टी की गहरी जुताई की गई है और उसके बाद क्षारयुक्त भूमि की उर्वरता बढ़ाने के लिए जिप्सम, गोबर की खाद, आवश्यक पोषक तत्व और उर्वरक डालकर भूमि सुधार का कार्य किया गया। अब इस नवसाध्य भूमि में 2.30 लाख पेड़-पौधे लगाने का कार्य शुरू किया गया है। इनमें मुख्य रूप से स्थानीय प्रजातियों के पेड़-पौधों का रोपण किया जाएगा।

इस 35 हेक्टेयर गौचर भूमि को चारों ओर से फेंसिंग कर सुरक्षित किया गया है। वृक्षों को पानी उपलब्ध कराने के लिए एक बोरवेल बनाया गया है और बिजली आपूर्ति के लिए एक सोलर प्लांट स्थापित किया गया है।

यह दृश्य केवल कणोतर गाँव तक सीमित नहीं है, बल्कि श्री अमित शाह के गांधीनगर लोकसभा क्षेत्र में आने वाले अहमदाबाद तथा गांधीनगर जिलों के 82 स्थानों पर यह कार्य युद्धस्तर पर चल रहा है। पूरी तरह वीरान और खारी भूमि का पुनर्जीवन कर वहाँ स्थानीय प्रजातियों के पेड़-पौधे लगाए जा रहे हैं और नया इकोसिस्टम विकसित किया जा रहा है।

केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह के 'गांधीनगर हरियाली लोकसभा प्रोजेक्ट' के तहत इस वर्ष सवा करोड़ पौधे लगाने का लक्ष्य है। इस लक्ष्य में वन विभाग अहमदाबाद और गांधीनगर जिलों के 82 स्थानों पर 540.92 हेक्टेयर क्षेत्र में 60 लाख पेड़-पौधे लगाएगा।

केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने एक व्यापक वृक्षारोपण अभियान द्वारा अपने गांधीनगर लोकसभा क्षेत्र को देश के सबसे हरियाले लोकसभा क्षेत्रों में परिवर्तित करने के उद्देश्य से एक महत्वाकांक्षी पहल की है। जलवायु परिवर्तन के विरुद्ध इस अभियान के अंतर्गत इस वर्ष समग्र गांधीनगर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र में एक करोड़ से अधिक पौधे लगाए जाएंगे।

बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण अभियान में स्थानीय प्रजातियों पर अधिक बल

गांधीनगर हरियाली लोकसभा प्रोजेक्ट में स्थानीय तथा विलुप्त होती वनस्पतियों की प्रजातियों के रोपण पर विशेष बल दिया गया है।

गुजरात के वन एवं पर्यावरण विभाग के प्रधान सचिव श्री विनोद राव ने कहा, "इस अभियान अंतर्गत तेजी से बढ़ने वाले वृक्षों के बजाय हमने अहमदाबाद एवं गांधीनगर जिलों की स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप वृक्षों का चयन किया है। वन विभाग द्वारा कुल 121 वनस्पति प्रजातियों का रोपण किया जाएगा, जिनमें लगभग 80 प्रजातियाँ स्थानीय होंगी। इतना ही नहीं; लगाए जाने वाले 60 लाख पौधों में से 6.05 लाख से अधिक पौधे 24 दुर्लभ, संकटग्रस्त और विलुप्तप्राय देसी प्रजातियों के हैं।"

स्थानीय वनस्पति प्रजातियों में कुमकुम (Mallotus spp.), शिमली, कंपीलो, कीलाई, चमुली, जंगली सहजन, सफेद सिरिश, जंगली जामफल, कचनार, पीला केसूड़ा / टेसू, रीठा, सफेद साग तथा सफेद गंभार आदि शामिल हैं।

वन एवं पर्यावरण विभाग के प्रधान सचिव श्री विनोद राव ने कहा, "देसी वृक्षों की बुवाई वन्यजीवों की विविधता को समर्थन देने वाले प्राकृतिक आवासों को पुनर्स्थापित कर इकोसिस्टम को पुनः विकसित करने में मदद करती है। देसी वृक्ष स्थानीय पक्षियों, सरीसृपों, तितलियों, मधुमक्खियों तथा अन्य पॉलीनेटरों को भोजन, आश्रय और प्रजनन के लिए उपयुक्त स्थान उपलब्ध कराते हैं।"

उन्होंने आगे कहा, "स्थानीय वनस्पतियों के फूल, फल और पत्तियाँ पूरे वर्ष कीटों व पक्षियों को पोषण देते हैं, जबकि घनी वनस्पति छोटे जीवों के लिए सुरक्षित मार्ग बनाती है। नवसाध्य भूमि, नमी बनाए रखने की क्षमता तथा जैव विविधता इन आवासों को और अधिक सशक्त बनाती है, जिससे वे जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का अधिक मजबूती से सामना कर सकते हैं।"

जैसे-जैसे ये पौधे बड़े होंगे, वैसे-वैसे वे स्थानीय स्तर पर संतुलन को पुनर्जीवित करेंगे, परागण को बढ़ाएंगे और एक समृद्ध तथा आत्मनिर्भर इकोसिस्टम बनाएंगे।

भावनगर मंडल को मिली बड़ी उपलब्धि : धंधुका ट्रैक्शन सब-स्टेशन (TSS) का 2×25 केवी प्रणाली पर सफल बैक चार्ज

यात्रियों को सुरक्षित, विश्वसनीय एवं उच्च क्षमता वाली रेल सेवाएं उपलब्ध कराने तथा आधुनिक रेल विद्युतीकरण अवसंरचना को और अधिक सुदृढ़ बनाने की दिशा में पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल ने एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा के मार्गदर्शन तथा वरिष्ठ मंडल विद्युत इंजीनियर (ट्रैक्शन) श्री विजेन्द्र कुमार मीणा के नेतृत्व एवं देखरेख में दिनांक 09 जुलाई को धंधुका ट्रैक्शन सब-स्टेशन (TSS) का 2×25 केवी ट्रैक्शन प्रणाली के अंतर्गत सफलतापूर्वक बैक चार्ज किया गया।

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि धंधुका ट्रैक्शन सब-स्टेशन का सफल बैक चार्ज बोटाद–गांधीग्राम रेलखंड पर 2×25 केवी ट्रैक्शन प्रणाली के अंतर्गत ओवरहेड उपकरण (OHE) को चार्ज करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण एवं निर्णायक उपलब्धि है। इससे इस रेलखंड पर आधुनिक ट्रैक्शन प्रणाली के क्रियान्वयन को नई गति मिलेगी तथा भविष्य में रेल परिचालन अधिक सुरक्षित, विश्वसनीय, ऊर्जा दक्ष एवं कुशल बनाया जा सकेगा।

उन्होंने बताया कि 2×25 केवी ट्रैक्शन प्रणाली पारंपरिक रेल विद्युतीकरण प्रणाली की तुलना में अधिक क्षमता, बेहतर वोल्टेज विनियमन तथा लंबी दूरी तक निर्बाध एवं विश्वसनीय विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करती है। इसके माध्यम से भारी एवं तीव्र गति वाली ट्रेनों का संचालन अधिक प्रभावी ढंग से किया जा सकेगा। साथ ही ऊर्जा की बचत, लाइन लॉस में कमी तथा रखरखाव संबंधी आवश्यकताओं में भी उल्लेखनीय कमी आएगी, जिससे रेल परिचालन की समग्र दक्षता में वृद्धि होगी।

इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने विद्युत विभाग तथा परियोजना से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को इस उपलब्धि के लिए बधाई देते हुए कहा कि धंधुका ट्रैक्शन सब-स्टेशन का सफल बैक चार्ज भावनगर मंडल में आधुनिक रेल अवसंरचना के विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि परियोजना के पूर्ण होने के पश्चात बोटाद–गांधीग्राम रेलखंड पर रेल परिचालन और अधिक विश्वसनीय, सुरक्षित, तीव्र एवं प्रभावी होगा तथा यात्रियों को बेहतर सेवाओं का लाभ मिलेगा। पश्चिम रेलवे का भावनगर मंडल भारतीय रेल के आधुनिकीकरण, ऊर्जा दक्षता, पर्यावरण-अनुकूल तकनीकों के उपयोग तथा विश्वस्तरीय रेल अवसंरचना के विकास के लिए निरंतर प्रतिबद्ध है। धंधुका ट्रैक्शन सब-स्टेशन का सफल बैक चार्ज इसी प्रतिबद्धता का एक सशक्त उदाहरण है, जो भविष्य में क्षेत्र के रेल परिचालन को नई गति प्रदान करने के साथ-साथ यात्रियों को अधिक सुरक्षित, निर्बाध एवं गुणवत्तापूर्ण रेल सेवाएं उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

घाट में बाढ़ के मुद्दे पर जनहित याचिका दायर करने के बावजूद कोई कार्रवाई नहीं हुई, सूरत अधिकारियों की लापरवाही के कारण पीड़ित है: छगनलाल मेवाड़ा

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। 2006 में तत्कालीन जल आपूर्ति मंत्री नरोत्तम पटेल के निर्देशों के बाद शुरू हुई बाढ़ की आपदा आज तक जारी है। इसके बावजूद, लोग अब शासकों की आलोचना कर रहे हैं और उनके खिलाफ नारे लगा रहे हैं। लेकिन चूंकि लोग चुनावों में बड़ी संख्या में भाजपा को वोट देते हैं, इसलिए शासक अक्षम और गैर-जिम्मेदार हो गए हैं और बाढ़ की समस्या बनी हुई है। इस समस्या को देखते हुए, नागरिकों के हितों के लिए लड़ने वाले सामाजिक सेवा संगठन विकास ग्राहक सुरक्षा और अनुसंधान केंद्र के दक्षिण गुजरात अध्यक्ष छगनलाल डी. मेवाड़ा ने 2016 में गुजरात उच्च न्यायालय में एक जनहित याचिका दायर की थी, जो दस साल बीत जाने के बावजूद आज भी गुजरात उच्च न्यायालय में लंबित है, क्योंकि अधिकारियों ने इस मामले में कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया है।

इस जनहित याचिका को दायर करने का मुख्य कारण यह है कि उकाई बांध का पानी सानिया हेमाद से कुम्भरिया, सरोली, दुनभल आदि से होकर बहने वाली खाड़ियों में जाता है। इन खाड़ियों पर बने अवैध बाजारों और बस्तियों को हटाने की जिम्मेदारी संबंधित ग्राम पंचायत और सूदा की है, लेकिन कुम्भरिया-सरोली ग्राम पंचायत और सूदा के नियंत्रण में आने वाली खाड़ियों में श्याम संगिनी टेक्सटाइल मार्केट और सारथी रेसिडेंस कुम्भरिया खाड़ी पर बने हुए हैं। कंकरापारा और सानियागाम से आने वाली सारथी नदी से कुम्भरिया के मोड़ पर दबाव शुरू हो गया है, जहां मीठी और कोयली खाड़ियों के दोनों किनारों पर बिल्डरों और अन्य लोगों द्वारा अवैध रूप से दुकानें, मकान और घर बनाए गए हैं। अवैध रूप से निर्मित भूमि बाजार के दूसरी ओर स्थित मागोब, पूर्व सांसद और पूर्व विधायक अमर सिंह जिन्ना की सरकारी जमीन पर सरकार द्वारा आवंटित जगह का इस्तेमाल करके एससी/एसटी और सिद्धार्थ गैस एजेंसी चलाई जा रही है। आदिवासियों ने आजीविका चलाने की मांग की थी, लेकिन उन्हें सरकार द्वारा आवंटित भूमि से चार गुना अधिक भूमि आवंटित की गई। उन्होंने उस पर पेट्रोल पंप बनाकर उसे बेच दिया। अब इसे 'अंबर हाउस' के नाम से जाना जाता है। यह देखकर दुख होता है कि कोयली नाले पर बढ़ते दबाव के कारण अन्य लोगों को परेशानी झेलनी पड़ रही है। दो दशक बीत चुके हैं। सबसे पहले तो जिम्मेदार कलेक्टर की जिम्मेदारी आती है। पिछले कलेक्टर से लेकर अब तक सेवा दे चुके कलेक्टर तक, यह जिम्मेदारी उन्हीं की है। अगर नाले का निरीक्षण किया गया होता, तो आज यह स्थिति नहीं होती। सूरत नगर निगम में शामिल होने से नगर का विस्तार हुआ है, और इसमें शामिल गांवों के विकास की जिम्मेदारी सूरत नगर निगम की है। उस जोन के कमिश्नर और उनके अधीन कार्यरत अधिकारियों, विशेषकर लिंबायत जोन के अधिकारियों की जिम्मेदारी न निभाने, भ्रष्ट अधिकारियों, रिश्वतखोर अधिकारी, बिल्डरों की गोद में बैठे निलंबित जोन प्रमुख विपुल गणेशवाला की वजह से 45 से अधिक लोगों की जान जा चुकी है। मौजूदा अधिकारियों की लापरवाही के कारण छोटे-बड़े व्यापारियों को लाखों-करोड़ों का नुकसान हुआ है। यह सब इन्हीं अधिकारियों की लापरवाही के कारण हुआ है। स्थानीय पार्षदों को सारी जानकारी होने के बावजूद, यह जानते हुए भी कि किसने कहाँ और कितना दबाव डाला है, भ्रष्टाचार हुआ है। जिसके कारण नुकसान हुआ है और निर्दोष जनता को भुगतना पड़ रहा है। जनता को जागरूक होना चाहिए और स्थानीय पार्षद खाली फोटो सेशन के लिए सस्ती शोहरत पाने के चक्कर में इधर-उधर भटक रहे हैं। माताओं, बहनों, भाइयों, युवाओं को उन्हें चेतावनी देनी चाहिए। क्योंकि असली संकट के समय, अगर उनके हाथ भ्रष्टाचार से सने हों, तो वे जनता के लिए क्या भला कर सकते हैं? सूरत शहर के हमेशा सतर्क रहने वाले संगठन, विकास ग्राहक सुरक्षा एवं अनुसंधान केंद्र, दक्षिण गुजरात के अध्यक्ष छगनलाल डी. मेवाड़ा ने वर्ष 2006 में स्थिति और मानसून के दौरान नदी के किनारे बसे नागरिकों के घरों और सामानों को हुए नुकसान को देखते हुए जनहित में वर्ष 2016 में गुजरात उच्च न्यायालय में जनहित याचिका संख्या 51/2016, 50/2016 और 34907/2022 दायर की। उस समय, गुजरात उच्च न्यायालय ने सूडान और एमएनपी के अधिकारियों और गुजरात सरकार के अधिकारियों को मौके पर निरीक्षण करने और अपनी रिपोर्ट माननीय गुजरात उच्च न्यायालय को प्रस्तुत करने के लिए नोटिस जारी किया था।लेकिन शराब के नशे में चूर अधिकारियों ने उच्च न्यायालय का अपमान किया और मनमानी की, जिसके चलते गुजरात उच्च न्यायालय के आदेश का आज तक पालन नहीं किया गया है। इसी वजह से आज तक लोग बाढ़ से पीड़ित हैं और सूरत शहर के लोग भारी परेशानी झेल रहे हैं। इसके मूल में सूरत नगर निगम, सुदा, कलेक्टर समेत सभी जिम्मेदार अधिकारियों की घोर लापरवाही का पाप है, जिन्होंने अपने कंधे बदल लिए हैं और गैंडे की खाल ओढ़ ली है।

महात्मा गांधी श्रम संस्थान, अहमदाबाद द्वारा पिछले तीन वर्षों में 7 हजार से अधिक प्रशिक्षुओं को किया गया प्रशिक्षित

- संगठित-असंगठित श्रमिकों के लिए गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण, अनुसंधान एवं व्यवसायोन्मुखी पाठ्यक्रमों द्वारा राज्य के श्रम क्षेत्र को मिल रहा है मजबूत आधार
- संस्थान में वातानुकूलित ऑडिटोरियम, सेमिनार हॉल, स्मार्ट क्लासरूम, गेस्ट हाउस, ओपन एयर थिएटर, ग्रंथालय सहित अत्याधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध

गांधीनगर : राज्य में श्रमिक प्रशिक्षण और श्रम विषयक अनुसंधान के क्षेत्र में कार्यरत महात्मा गांधी श्रम संस्थान (एमजीएलआई) द्वारा पिछले तीन वर्षों के दौरान कुल 123 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें राज्य के विभिन्न सरकारी विभागों, सार्वजनिक एवं निजी उद्योगों, श्रमिक संगठनों तथा अन्य संस्थाओं के 7,211 से अधिक प्रशिक्षु सहभागी हुए। श्रम कानूनों से लेकर औद्योगिक संबंध, कार्यस्थल सुरक्षा, औद्योगिक सुरक्षा, मानव संसाधन तथा पर्यावरण प्रबंधन जैसे विषयों पर आयोजित ये प्रशिक्षण कार्यक्रम राज्य में श्रमिकों की क्षमता वृद्धि और कौशल विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।.

अहमदाबाद के गुरुकुल क्षेत्र में हरित एवं विशाल परिसर में स्थित महात्मा गांधी श्रम संस्थान 15 सितंबर, 1979 से राज्य सरकार के श्रम, कौशल विकास एवं रोजगार विभाग के मार्गदर्शन में एक स्वायत्त संस्था के रूप में कार्यरत है। संगठित एवं असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों, कर्मचारियों, अधिकारियों तथा अन्य हितधारकों को श्रम विषयक प्रशिक्षण प्रदान करना, श्रम संबंधी अनुसंधान करना तथा व्यवसायोन्मुखी शैक्षणिक पाठ्यक्रमों का संचालन करना संस्थान के प्रमुख कार्यक्षेत्र हैं।

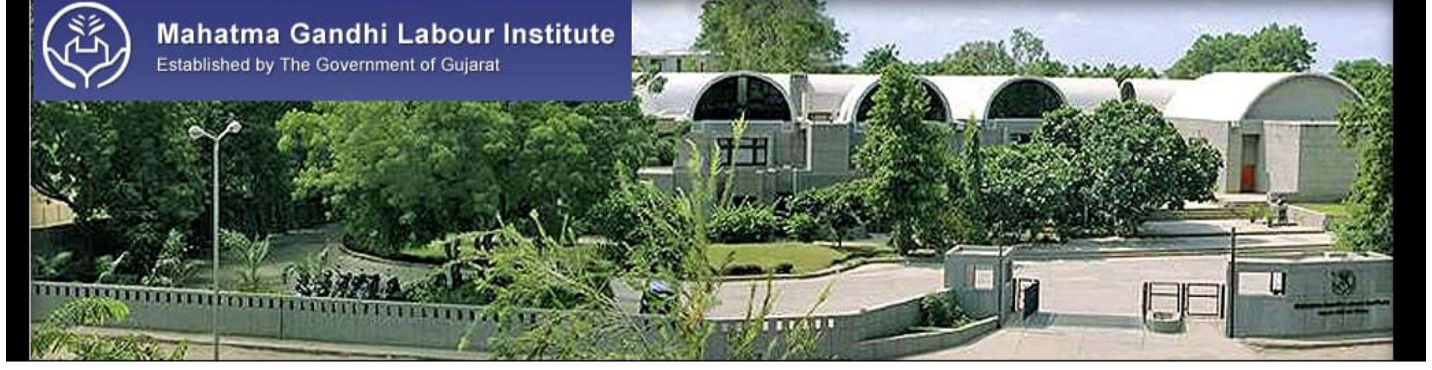

संस्थान द्वारा प्रत्येक वर्ष 40 से अधिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इनमें श्रम कानून, औद्योगिक संबंध, सामाजिक संवाद, श्रमिक कल्याण, कार्यस्थल सुरक्षा, औद्योगिक सुरक्षा, श्रमिकों के जीवन की गुणवत्ता तथा बदलते श्रम कानूनों जैसे विषय शामिल हैं। इसके अतिरिक्त; विभिन्न सरकारी विभागों, सार्वजनिक उपक्रमों, निजी उद्योगों तथा श्रमिक संगठनों की आवश्यकताओं के अनुरूप विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जाता है। प्रशिक्षण के अतिरिक्त संस्थान द्वारा श्रम एवं श्रमिक कल्याण से संबंधित विभिन्न अनुसंधान अध्ययन भी किए जाते हैं, जिनके निष्कर्ष राज्य सरकार के लिए नीति निर्माण और निर्णय प्रक्रिया में उपयोगी सिद्ध होते हैं। राज्य में सौहार्दपूर्ण औद्योगिक संबंध बनाए रखने के उद्देश्य से त्रिपक्षीय सम्मेलन, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय परिसंवाद, कार्यशालाओं तथा विशेष चर्चा सत्रों का भी आयोजन किया जाता है।

महात्मा गांधी श्रम संस्थान के भवन का डिजाइन देश के प्रसिद्ध वास्तुकार श्री बालकृष्ण विट्ठलदास (बी. वी.) दोषी द्वारा तैयार किया गया है। इसकी स्थापत्य कला और कार्यात्मक योजना इसे विशिष्ट पहचान प्रदान करती है। लगभग 12 हजार वर्ग मीटर के परिसर में स्थित इस संस्थान में 170 सीटों की क्षमता वाला आधुनिक वातानुकूलित ऑडिटोरियम, 80 सीटों की क्षमता वाला सेमिनार हॉल, स्मार्ट क्लासरूम, कंप्यूटर प्रयोगशाला, गेस्ट हाउस, ओपन एयर थिएटर तथा 22 हजार से अधिक पुस्तकों से युक्त समृद्ध ग्रंथालय जैसी अत्याधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

संस्थान पिछले दो दशकों से विभिन्न स्नातकोत्तर एवं व्यवसायोन्मुखी पाठ्यक्रमों का भी सफलतापूर्वक संचालन कर रहा है। इनमें एमए (एचआर एंड लेबर रिलेशंस), एमए (मनोविज्ञान), पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन लेबर लॉ एंड प्रैक्टिस, पोस्ट डिप्लोमा इन इंडस्ट्रियल सेफ्टी, पोस्ट डिप्लोमा इन इंडस्ट्रियल एनवायरनमेंटल टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट, एडवांस डिप्लोमा इन इंडस्ट्रियल रिलेशंस एंड लेबर कोड्स तथा विभिन्न प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम शामिल हैं। इन पाठ्यक्रमों के माध्यम से युवाओं और कार्यरत पेशेवरों को श्रम एवं औद्योगिक क्षेत्र में विशेष ज्ञान तथा व्यवसायोन्मुखी कौशल प्राप्त करने का अवसर मिलता है। श्रम क्षेत्र में राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय सहयोग को और अधिक सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से संस्थान ने हाल ही में दत्तोपंत ठेंगड़ी राष्ट्रीय श्रमिक विकास एवं शिक्षा केंद्र तथा इंटरनेशनल लेबर ऑर्गेनाइजेशन (आईएलओ) के साथ समझौता ज्ञापनों (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं। इस सहयोग के परिणामस्वरूप अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप प्रशिक्षण, पाठ्यक्रम तथा ज्ञान के आदान-प्रदान को नई दिशा मिली है।

श्रम, कौशल विकास एवं रोजगार मंत्री श्री कंवरजीभाई बावळिया तथा राज्य मंत्री श्री कांतिभाई अमृतिया के नेतृत्व में महात्मा गांधी श्रम संस्थान राज्य में श्रमिक प्रशिक्षण, अनुसंधान तथा कौशल विकास के क्षेत्र में निरंतर सक्रिय रूप से कार्य कर रहा है। आधुनिक सुविधाओं, अनुभवी विशेषज्ञों तथा गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण व्यवस्था के आधार पर संस्थान आज राज्य के श्रम क्षेत्र की अग्रणी एवं विश्वसनीय संस्था के रूप में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

जेतलसर जंक्शन स्टेशन पर आधुनिक एकीकृत यात्री सूचना प्रणाली (IPIS) का सफल कमीशनिंग

यात्रियों को मिलेगी रियल टाइम रेल सूचना, सूचना प्रबंधन होगा अधिक स्मार्ट एवं प्रभावी

यात्रियों को अधिक सटीक, त्वरित एवं विश्वसनीय रेल सूचना उपलब्ध कराने की दिशा में पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल ने एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा के मार्गदर्शन तथा वरिष्ठ मंडल दूरसंचार एवं सिग्नल इंजीनियर (Sr. DSTE) श्री एच. एस. आर्या के नेतृत्व एवं देखरेख में जेतलसर जंक्शन रेलवे स्टेशन पर अत्याधुनिक इंटीग्रेटेड पैसेंजर इंफॉर्मेशन सिस्टम (Integrated Passenger Information System – IPIS) का सफलतापूर्वक कमीशनिंग कर इसे यात्रियों की सेवा के लिए समर्पित कर दिया गया है।

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि यह आधुनिक प्रणाली स्टेशन पर उपलब्ध विभिन्न यात्री सूचना प्रणालियों को एकीकृत करते हुए ट्रेनों के आगमन एवं प्रस्थान, प्लेटफॉर्म संख्या, कोच पोजीशन तथा अन्य महत्वपूर्ण जानकारियां वास्तविक समय (Real Time) में प्रदर्शित करेगी। इसके माध्यम से सूचना प्रसारण अधिक तेज, सटीक एवं प्रभावी होगा, जिससे यात्रियों की यात्रा और अधिक सुगम एवं सुविधाजनक बनेगी।

उन्होंने बताया कि स्थापित IPIS प्रणाली के अंतर्गत स्टेशन पर विभिन्न आधुनिक सूचना उपकरण लगाए गए हैं। कोच गाइडेंस डिस्प्ले बोर्ड के माध्यम से ट्रेन संख्या, कोच पोजीशन, प्लेटफॉर्म संख्या, स्टेशन कोड एवं रेलवे जोन की जानकारी प्रदर्शित होगी। स्टेशन लार्ज डिस्प्ले बोर्ड (SLDB) पर ट्रेन का नाम, ट्रेन संख्या, आगमन एवं प्रस्थान समय तथा प्लेटफॉर्म संख्या प्रदर्शित होगी। वहीं एट ए ग्लांस डिस्प्ले बोर्ड के माध्यम से इंजन के सापेक्ष कोचों की स्थिति, ट्रेन संख्या, आगमन एवं प्रस्थान समय तथा प्लेटफॉर्म संबंधी जानकारी उपलब्ध रहेगी।

इसके अतिरिक्त, आधुनिक पब्लिक एड्रेस (PA) सिस्टम के माध्यम से ट्रेनों से संबंधित सूचनाओं एवं उद्घोषणाओं का प्रसारण स्वचालित तथा आवश्यकता अनुसार मैनुअल दोनों माध्यमों से किया जाएगा, जिससे यात्रियों तक समय पर सही एवं स्पष्ट सूचना पहुंच सकेगी। नई IPIS प्रणाली के लागू होने से स्टेशन की सूचना प्रदर्शन एवं उद्घोषणा व्यवस्था आधुनिक तकनीक से सुसज्जित हो गई है। इससे सूचना प्रबंधन की गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार होगा तथा यात्रियों को समय पर सटीक जानकारी उपलब्ध होने से उनकी यात्रा अधिक सुविधाजनक और निर्बाध बनेगी।

जेतलसर जंक्शन स्टेशन पर IPIS प्रणाली का सफल कमीशनिंग 08 जुलाई को संपन्न किया गया। यह परियोजना पश्चिम रेलवे द्वारा यात्री सुविधाओं के आधुनिकीकरण, डिजिटल रेलवे की अवधारणा को साकार करने तथा स्मार्ट स्टेशन विकसित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

पश्चिम रेलवे का भावनगर मंडल यात्रियों को सुरक्षित, सुविधाजनक, आधुनिक एवं विश्वस्तरीय रेल सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए निरंतर नई तकनीकों को अपनाने तथा यात्री सुविधाओं के विस्तार के प्रति प्रतिबद्ध है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल का 'बैक टू स्कूल मिशन' अंतर्गत बनासकांठा के विद्यार्थियों के साथ प्रेरणादायी संवाद

- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की भावना है कि राज्य और देश का कोई भी बच्चा शिक्षा से वंचित न रहे : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल
- समाज के सर्वांगीण विकास के लिए बेटियों का शिक्षित होना अत्यंत आवश्यक है : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल
- मुख्यमंत्री ने विद्यार्थियों को दिया आत्मविश्वास और उज्ज्वल भविष्य का मंत्र
- मुख्यमंत्री के साथ हुई बातचीत से उत्साह बढ़ा, अब नियमित पढ़ाई करके अपने सपने साकार करूंगी : लाभार्थी बेटी सुहानी
- शिक्षा की मुख्यधारा से वंचित बच्चों के लिए आशीर्वाद समान बन रहा है राज्य सरकार का 'बैक टू स्कूल मिशन'
- राज्य में बनासकांठा जिले में 29 हजार से अधिक बच्चों का पुनः स्कूल प्रवेश

गांधीनगर : राज्य सरकार द्वारा शिक्षा के सार्वभौमीकरण तथा स्कूल ड्रॉप-आउट दर को कम करने के दृढ़ संकल्प के साथ पूरे राज्य में 'बैक टू स्कूल मिशन' चलाया जा रहा है।इस अभियान के अंतर्गत मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने शनिवार को बनासकांठा जिले के थराद तहसील के तेनीवाडा में विद्यालय में पुनः प्रवेश प्राप्त करने वाले बच्चों के साथ प्रेरणादायी संवाद किया।

मुख्यमंत्री ने विद्यालय में पुनः प्रवेश प्राप्त करने वाले लगभग 12 विद्यार्थियों, उनके अभिभावकों तथा मेंटर्स के साथ आत्मीय संवाद किया।उन्होंने विद्यार्थियों से सहज और आत्मीयता के साथ बातचीत की तथा बच्चों के विद्यालय छोड़ने के कारणों, पुनः प्रवेश के बाद के शैक्षणिक अनुभवों और भविष्य को लेकर उनकी आशाओं के बारे में रुचिपूर्वक जानकारी ली। उन्होंने विद्यार्थियों को नियमित रूप से विद्यालय जाने, परिश्रमपूर्वक अध्ययन करने, आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने तथा जीवन में ऊँचे लक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी बेटियाँ घर के कार्यों की जिम्मेदारी निभाने के साथ-साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन करने की क्षमता रखती हैं। उन्होंने बेटियों की शिक्षा पर विशेष बल देते हुए कहा कि समाज के सर्वांगीण विकास के लिए बेटियों का शिक्षित होना अत्यंत आवश्यक है। अभिभावकों को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि प्रत्येक माता-पिता का कर्तव्य है कि वे अपने बच्चों को नियमित शिक्षा दिलाएँ तथा उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए उन्हें प्रोत्साहित करें।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की भावना है कि राज्य और देश का कोई भी बच्चा शिक्षा से वंचित न रहे। श्री पटेल ने आगे कहा कि इसी दृष्टि के साथ उन्होंने गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में शाला प्रवेशोत्सव और कन्या केळवणी महोत्सव जैसी जनभागीदारी आधारित पहलें प्रारंभ की थीं; जिसके परिणामस्वरूप आज समाज में शिक्षा के प्रति व्यापक जागरूकता उत्पन्न हुई है।उन्होंने कहा कि आज शिक्षक केवल बच्चों को पढ़ाने का ही नहीं, बल्कि विद्यालय छोड़ चुके प्रत्येक बच्चे को खोजकर पुनः शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने की जिम्मेदारी भी सफलतापूर्वक निभा रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि शिक्षा व्यक्ति, परिवार और समाज के सर्वांगीण विकास का सबसे प्रभावी साधन है। यदि गरीब और सामान्य परिवार अपनी नई पीढ़ी को शिक्षा देंगे तो वे वर्तमान आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियों से बाहर निकल सकेंगे। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में सरकार द्वारा गरीबों के लिए राशन, स्वास्थ्य तथा अन्य अनेक कल्याणकारी योजनाएँ लागू की गई हैं।

इन सभी योजनाओं का वास्तविक लाभ तभी मिलेगा, जब बच्चे शिक्षित बनेंगे और अपने जीवन में आगे बढ़ेंगे। शिक्षा द्वारा ही नई पीढ़ी का नव सृजन होगा तथा समग्र परिवार व समाज के विकास का मार्ग प्रशस्त बनेगा।

इस अवसर पर बेटियों की अभिभावक मणीबेन ने कहा कि उनकी आर्थिक एवं पारिवारिक परिस्थितियाँ अनुकूल न होने के कारण उन्हें अपनी दोनों बेटियों की पढ़ाई बीच में ही छुड़वानी पड़ी थी। गाँव के विद्यालय के शिक्षकों द्वारा समझाने तथा सरकार की योजना के अंतर्गत अब दोनों बेटियों की पढ़ाई पुनः प्रारंभ कराई गई है।

इस अवसर पर लाभार्थी बेटी सुहानी ने कहा कि वह कक्षा 10 में पढ़ती थी। बोर्ड परीक्षा होने के कारण उसने पढ़ाई छोड़ दी थी। इसके बाद हमारे शिक्षक मेरे घर आए और मेरे अभिभावकों को समझाया। उसके बाद मेरे अभिभावक समझ गए और मैंने पुनः बोर्ड परीक्षा दी। मैं बोर्ड परीक्षा में पास हुई। इसके बाद मैंने कक्षा 11 में प्रवेश लिया है। मुख्यमंत्री ने आज मुझसे बात की, मुझे बहुत अच्छा लगा और अब मैं नियमित रूप से पढ़ने जाऊँगी।

वर्ष 2023-24, 2024-25 तथा 2025-26 के दौरान विभिन्न कारणों से बीच में विद्यालय छोड़ देने वाले बच्चों को पुनः शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए राज्य सरकार द्वारा यह विशेष अभियान चलाया गया है।

बनासकांठा जिला कलेक्टर श्री मिहिर पटेल के मार्गदर्शन में जिला शिक्षा अधिकारी तथा जिला प्राथमिक शिक्षा अधिकारी के नेतृत्व में समग्र शिक्षा अभियान, शिक्षकों तथा तहसील स्तर की टीमों के सतत प्रयासों से इस मिशन के अंतर्गत राज्य में उत्कृष्ट कार्य किया गया है।

जिले में किए गए व्यापक सर्वेक्षण के दौरान कुल 37,415 ड्रॉपआउट बच्चों की पहचान की गई थी। इनमें से 29,451 बच्चों का सफलतापूर्वक पुनः प्रवेश (री-एनरोलमेंट) कराया गया है। पुनः प्रवेश प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में 14,875 बालक तथा 14,576 बालिकाएँ शामिल हैं।

इनमें से 23,032 विद्यार्थियों को गुजरात स्टेट ओपन स्कूल (जीएसओएस) से जोड़ा गया है, जबकि 6,368 विद्यार्थियों को नियमित विद्यालयों में पुनः प्रवेश दिलाया गया है। राज्य सरकार का 'बैक टू स्कूल मिशन' राज्य के एक भी बच्चे को शिक्षा के अधिकार से वंचित न रहने देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण एवं आशीर्वाद समान पहल साबित हो रही है।

बेचराजी माता जी के भक्तों के लिए बड़ी खुशखबरी: कटोसण रोड–बेचराजी रणुज रेलखंड पर पहली बार 120 किमी/घंटा की गति से सफल स्पीड ट्रायल

पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल के कटोसण रोड–बेचराजी–रणुज (63 किलोमीटर) ब्रॉडगेज रेलखंड का रेल संरक्षा आयुक्त (पश्चिम सर्कल) द्वारा 09 से 11 जुलाई, 2026 तक सफलतापूर्वक संरक्षा निरीक्षण सम्पन्न किया गया। यह निरीक्षण इस रेलखंड पर यात्री रेल सेवाओं के शुभारंभ की दिशा में एक महत्वपूर्ण एवं अंतिम तकनीकी चरण है।

तीन दिवसीय निरीक्षण के दौरान रेल संरक्षा आयुक्त ने मोटर ट्रॉली द्वारा संपूर्ण रेलखंड का विस्तृत निरीक्षण किया। 11 जुलाई, 2026 को इस रेलखंड पर 120 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से सफल स्पीड ट्रायल किया गया, जिसमें रेलखंड पर सुरक्षित अधिकतम गति की भी जांच की गई।

निरीक्षण के दौरान ट्रैक की गुणवत्ता, सिग्नल एवं दूरसंचार प्रणाली, पुलों, ओवरहेड विद्युत (OHE) प्रणाली, इंटरलॉकिंग, ट्रैक फिटिंग, बैलास्ट, ओएचई की ऊंचाई तथा अन्य सभी संरक्षा मानकों का विस्तृत परीक्षण किया गया। अंतिम संरक्षा स्वीकृति प्राप्त होने के उपरांत इस रेलखंड पर यात्री रेल सेवाओं का संचालन प्रारंभ किया जाएगा।

इस निरीक्षण में रेल संरक्षा आयुक्त (पश्चिम सर्कल) श्री ई. श्रीनिवास, मंडल रेल प्रबंधक, अहमदाबाद श्री वेद प्रकाश, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (निर्माण) श्री प्रदीप गुप्ता, डायरेक्टर, गुजरात रेल अवसंरचना विकास निगम लिमिटेड (जी-राइड) श्री राजकुमार, जनरल मैनेजर (सिविल), जी-राइड श्री शिवेन्द्र कुमार, मुख्य ट्रैक इंजीनियर, मुख्य परिचालन प्रबंधक (जी) सहित निर्माण एवं ओपन लाइन विभागों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

परियोजना की प्रमुख विशेषताएं

कटोसण रोड–बेचराजी–रणुज (63 किमी) गेज परिवर्तन परियोजना को वर्ष 2017 में स्वीकृति प्रदान की गई थी। लगभग 1000 करोड़ की लागत से विकसित इस परियोजना का निर्माण भारतीय रेल एवं गुजरात रेल अवसंरचना विकास निगम लिमिटेड (G-RIDE) के संयुक्त उपक्रम के अंतर्गत किया गया है। इस रेलखंड पर 14 रेलवे स्टेशन, 9 बड़े पुल, 100 छोटे पुल, 47 रोड अंडर ब्रिज/लिमिटेड हाइट सब-वे (RUB/LHS) तथा 16 कर्व विकसित किए गए हैं।

बेचराजी स्टेशन का धार्मिक एवं ऐतिहासिक महत्व

इस रेलखंड का प्रमुख स्टेशन बेचराजी गुजरात के महेसाणा जिले में स्थित है, जिसे विश्वविख्यात श्री बहुचर माता मंदिर के प्रमुख प्रवेश द्वार के रूप में विकसित किया गया है। बहुचर माता मंदिर गुजरात के प्रमुख शक्तिपीठों में से एक है, जहां प्रतिवर्ष लाखों श्रद्धालु दर्शन के लिए आते हैं। श्रद्धालुओं की सुविधा को ध्यान में रखते हुए तत्कालीन महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ ने गायकवाड़ बड़ौदा रेलवे (GBR) का विस्तार बेचराजी तक कराया था।

क्षेत्र को मिलेगा आधुनिक रेल संपर्क

लंबे समय तक बेचराजी क्षेत्र रेल संपर्क से वंचित रहा, जिसके कारण श्रद्धालुओं, स्थानीय नागरिकों तथा औद्योगिक इकाइयों को मुख्यतः सड़क मार्ग पर निर्भर रहना पड़ता था। इस परियोजना के पूर्ण होने से क्षेत्र को आधुनिक रेल नेटवर्क से जोड़ने का मार्ग प्रशस्त हो गया है, जिससे धार्मिक पर्यटन, औद्योगिक विकास तथा क्षेत्रीय परिवहन व्यवस्था को नई गति मिलेगी।

तीन दिवसीय संरक्षा निरीक्षण

संरक्षा निरीक्षण के प्रथम दिन कटोसण रोड से बेचराजी, दूसरे दिन बेचराजी से चाणसमा तथा तीसरे दिन चाणसमा से रणुज तक रेलखंड का विस्तृत निरीक्षण किया गया। सभी आवश्यक औपचारिकताएं पूर्ण होने तथा अंतिम संरक्षा स्वीकृति प्राप्त होने के बाद इस रेलखंड पर यात्री रेल सेवाएं प्रारंभ करने की प्रक्रिया आगे बढ़ाई जाएगी।

क्षेत्रीय विकास को मिलेगा नया आयाम

इस रेलखंड के प्रारंभ होने से महेसाणा एवं पाटण जिलों के प्रमुख केंद्र बेचराजी, खांभेल एवं चाणसमा बेहतर रेल संपर्क से जुड़ जाएंगे। इससे स्थानीय नागरिकों, विद्यार्थियों, नौकरीपेशा लोगों, व्यापारियों तथा उद्योगों को सुरक्षित, किफायती एवं सुविधाजनक परिवहन सुविधा उपलब्ध होगी। साथ ही विश्व प्रसिद्ध बहुचर माता मंदिर आने वाले लाखों श्रद्धालुओं की यात्रा अधिक सुगम बनेगी।

यह रेल परियोजना क्षेत्र में रोजगार सृजन, पर्यटन, व्यापार एवं औद्योगिक विकास को नई गति प्रदान करेगी। साथ ही पर्यावरण-अनुकूल, सुरक्षित एवं सतत रेल परिवहन को बढ़ावा देते हुए क्षेत्रीय आर्थिक एवं सामाजिक विकास को एक नया आयाम देगी।

नीति आयोग की रिपोर्ट में दावा किया गया है: 10 वर्षों में 94 हजार सरकारी स्कूल बंद हुए, शिक्षा व्यवस्था को लेकर गंभीर चिंताएं

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। केंद्र सरकार के नीति आयोग की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में प्रतिदिन 25 स्कूल बंद हो रहे हैं। पिछले 10 वर्षों में 94,000 सरकारी स्कूल बंद हो चुके हैं, जिनमें उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में सबसे अधिक 40,000 स्कूल बंद हुए हैं। इसके चलते 22.6 अरब छात्रों का प्रवेश रद्द हो गया है।

नीति आयोग द्वारा जारी भारतीय शिक्षा प्रणाली पर हालिया रिपोर्ट बेहद चौंकाने वाली है। 'भारत में स्कूली शिक्षा प्रणालीः गुणवत्ता और उपलब्धि के लिए सामयिक विश्लेषण और नीतिगत रूपरेखा' शीर्षक वाली इस रिपोर्ट से पता चलता है कि पिछले 10 वर्षों में देश से लगभग 94,000 सरकारी स्कूल गायब हो गए हैं।

शिक्षा जगत में चिंता की लहर पैदा करने वाले इन आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण भारत में स्कूली शिक्षा इस समय एक गंभीर संकट से गुजर रही है। इसके अलावा, रिपोर्ट के चौंकाने वाले आंकड़े बताते हैं कि पिछले 10 वर्षों में भारत में औसतन प्रतिदिन 25 स्कूल बंद हुए हैं, जिनमें से अधिकांश सरकारी स्कूल हैं। सरकारी स्कूलों की संख्या में गिरावटः 2014-15 में देश में सरकारी स्कूलों की संख्या 11.07 लाख थी, जो 2024-25 में घटकर 10.13 लाख रह गई है।

इस दौरान सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों की संख्या भी 83,000 से घटकर 79,000 हो गई है। वहीं निजी स्कूलों के मामले में स्थिति बिल्कुल उलट है। इस दस साल की अवधि में निजी स्कूलों की संख्या 28 लाख से बढ़कर 33 लाख हो गई है। पूरी शिक्षा व्यवस्था के सामने एक बड़ी चुनौती है। अगर हालात ऐसे ही बने रहे तो 'गुजरात पढ़ो, गुजराती भाषा पढ़ो, गुजराती भाषा में लिखो' का नारा सिर्फ कागजों पर ही रह जाएगा। असल में इसका क्रियान्वयन कैसे होगा?

मंडल रेलवे चिकित्सालय, प्रतापनगर में फाइब्रोस्कैन, लिवर स्क्रीनिंग शिविर का आयोजन

पश्चिम रेलवे के मंडल रेलवे चिकित्सालय, प्रतापनगर, वडोदरा के ओपीडी कक्ष में चिकित्सा विभाग द्वारा मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ दीपाली तिवारी के मार्गदर्शन में लिवर स्क्रीनिंग (फाइब्रोस्कैन) शिविर का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। शिविर का उद्देश्य रेलवे अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके आश्रितों में यकृत (लिवर) संबंधी रोगों की प्रारंभिक अवस्था में पहचान कर समय पर उपचार एवं आवश्यक परामर्श उपलब्ध कराना था।

पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल के जनसंपर्क अधिकारी श्री अनुभव सक्सेना द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार इस शिविर में कुल 67 रेलवे अधिकारी, कर्मचारी एवं आश्रितों की फाइब्रोस्कैन जांच श्री अविनाश जगताप (BO) एवं श्री सुनील परमार (टेक्नीशियन), ज़ाइडस हेल्थकेयर लिमिटेड, डिस्कवरी डिवीजन, वडोदरा तथा उनकी टीम द्वारा की गई।

मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ दीपाली तिवारी ने बताया कि फाइब्रोस्कैन एक आधुनिक, सुरक्षित, दर्दरहित एवं गैर-आक्रामक जांच पद्धति है, जिसके माध्यम से लिवर में वसा (फैटी लिवर) एवं फाइब्रोसिस (लिवर में कठोरता/क्षति) का त्वरित आकलन किया जाता है। यह जांच विशेष रूप से मधुमेह, मोटापा, फैटी लिवर, लंबे समय तक शराब के सेवन, हेपेटाइटिस-बी/सी, बढ़े हुए लिवर एंजाइम तथा मेटाबॉलिक सिंड्रोम से पीड़ित व्यक्तियों के लिए अत्यंत उपयोगी है।

डॉ दीपाली के अनुसार, समय रहते लिवर रोगों की पहचान होने पर उचित जीवनशैली में परिवर्तन, नियमित चिकित्सकीय परामर्श एवं उपचार के माध्यम से सिरोसिस तथा अन्य गंभीर जटिलताओं से बचाव संभव है। मंडल रेलवे चिकित्सालय द्वारा समय-समय पर ऐसे स्वास्थ्य जागरूकता एवं जांच शिविर आयोजित किए जाते रहे है, ताकि रेलवे परिवार को बेहतर एवं गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराई जा सकें।

सूरत में बाढ़ से हुए नुकसान पर वराछा बैंक की बड़ी राहत : मात्र 9 प्रतिशत ब्याज पर 5 लाख रुपए तक की 'फ्लड लोन' योजना की घोषणा

शनिवार : सूरत में भारी बारिश और बाढ़ के कारण शहर के कई क्षेत्रों में पानी भर गया था। अचानक आई इस आपदा के समय कई औद्योगिक तथा आवासीय क्षेत्रों में पानी भर जाने से उद्योगों, व्यावसायिक प्रतिष्ठानों और रोजगार को नुकसान पहुंचा है। ऐसे समय में उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी ने शनिवार को सूरत के द वराछा को-ऑपरेटिव बैंक लिमिटेड द्वारा मात्र 9 प्रतिशत ब्याज पर 5 लाख रुपए तक की 'फ्लड लोन' योजना तथा बाढ़ और जलभराव से सुरक्षा प्रदान करने वाली नई बीमा योजनाओं को लॉन्च किया ।

सूरत शहर में हाल ही में भारी बारिश के कारण उत्पन्न हुई संवेदनशील स्थिति के बीच उप मुख्यमंत्री ने सूरत के नागरिकों की जिंदादिली और संकट के समय एक-दूसरे की मदद करने की भावना को नमन किया।

वराछा बैंक के मुख्य कार्यालय में आयोजित कार्यक्रम में उप मुख्यमंत्री ने कहा कि बाढ़ के कारण हुए नुकसान का सही आकलन करने के लिए सरकार द्वारा 72 घंटे में सर्वेक्षण पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है, जिसमें से 80 प्रतिशत कार्य पूरा हो चुका है। छोटी-बड़ी इंडस्ट्रीज, दुकानों और कमर्शियल इकाइयों को हुए नुकसान की रिपोर्ट तैयार की जा रही है। इसके आधार पर राज्य सरकार द्वारा शीघ्र ही राहत पैकेज की घोषणा की जाएगी।

उप मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि सूरत की मिट्टी में मुश्किलों से लड़ने और सकारात्मकता के साथ फिर से खड़े होने की ताकत है। उन्होंने सरकार और स्थानीय सामाजिक संस्थाओं के साथ मिलकर शीघ्र ही सूरत को फिर से खड़ा करने की कटिबद्धता व्यक्त की।

उप मुख्यमंत्री ने कहा कि 'आपदा के समय वराछा बैंक आपके साथ' की उक्ति को वराछा बैंक ने सही अर्थों में साकार किया है। उन्होंने संकट के समय वराछा बैंक की इस उत्कृष्ट पहल की सराहना की। मुश्किल के इस समय में वराछा को-ऑपरेटिव बैंक ने सामाजिक उत्तरदायित्व निभाते हुए बाढ़ प्रभावितों के लिए मात्र 9 प्रतिशत की ब्याज दर पर 5 लाख रुपए तक की 'फ्लड लोन' देने की घोषणा की है, जिसके लिए उन्होंने बैंक को बधाई दी।

इस अवसर पर स्वास्थ्य राज्य मंत्री श्री प्रफुलभाई पानशेरिया ने भी वराछा बैंक की प्रशंसा करते हुए कहा कि इस उत्कृष्ट निर्णय से छोटे व्यापारियों को अधिकतम लाभ होगा।

इस अवसर पर विधायक श्री प्रवीणभाई घोघारी तथा बैंक के चेयरमैन श्री नरेंद्रभाई काकडिया व श्री विट्ठलभाई धानाणी ने प्रासंगिक संबोधन किया । इस अवसर पर विधायक श्री कांति बलर, अग्रणी श्री जयंतिभाई एकलेरा, श्री मनहरभाई साचपरा तथा मुकेशभाई पटेल सहित अन्य अग्रणी उपस्थित रहे।

योजना का त्वरित लाभ लिया जा सके, इसके लिए बैंक ने आकर्षक शर्तों की घोषणा की है :

आपदा के समय सुरक्षित कल के लिए 5 लाख रुपए तक की ऋण सहायता। ग्राहकों पर आर्थिक बोझ न पड़े, इसके लिए ब्याज दर मात्र 9 प्रतिशत रखी गई है। ऋण की अदायगी के लिए 60 महीने की लंबी अवधि दी जाएगी। इस ऋण को प्राप्त करने में कोई परेशानी न हो, इसके लिए वराछा बैंक के मुख्य कार्यालय में एक विशेष डेडिकेटेड स्पेस भी तैयार किया गया है, जहां से आवेदकों को त्वरित मार्गदर्शन और ऋण की मंजूरी मिल सकेगी।

बाढ़ और जलभराव से सुरक्षा प्रदान करने वाली नई बीमा योजना

भविष्य में ऐसी प्राकृतिक आपदाओं के विरुद्ध आर्थिक सुरक्षा मिल सके, इस उद्देश्य से वराछा बैंक द्वारा एक विशेष जनरल इंश्योरेंस (बीमा) योजना भी शुरू की गई है। इस योजना के तहत 1,000 रुपए के वार्षिक प्रीमियम पर 10 लाख रुपए के माल के स्टॉक के लिए बीमा योजना का लाभ लिया जा सकेगा। बाढ़ या क्षेत्रों में जलभराव जैसी स्थिति में व्यापारियों के स्टॉक, गोदाम या संपत्ति को होने वाले नुकसान के विरुद्ध बीमाधारक को पूर्ण आर्थिक सुरक्षा प्रदान की जाएगी।

पश्चिम रेलवे द्वारा 7/11 मुंबई उपनगरीय ट्रेन,धमाकों के पीड़ितों को श्रद्धांजलि अर्पित

आज से बीस वर्ष पूर्व, 11 जुलाई, 2006 को मुंबई ने अपने इतिहास की सबसे दुखद घटनाओं में से एक का सामना किया था, जब पश्चिम रेलवे के माटुंगा रोड, माहिम, बांद्रा, सांताक्रुज़, जोगेश्वरी, बोरीवली तथा भायंदर स्टेशनों के निकट सात उपनगरीय ट्रेनों के प्रथम श्रेणी डिब्बों में सिलसिलेवार बम विस्फोट हुए थे। इस दुखद घटना की 20वीं बरसी के अवसर पर 11 जुलाई, 2026 को पश्चिम रेलवे ने दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि अर्पित की। वरिष्ठ रेल अधिकारियों ने सम्मान स्वरूप संबंधित सातों स्टेशनों पर पुष्पक्र अर्पित किए तथा जान गंवाने वालों की स्मृति में दो मिनट का मौन रखा।

श्रद्धांजलि अर्पित करने वाले अधिकारियों में माटुंगा रोड स्टेशन पर प्रमुख मुख्य परिचालन प्रबंधक श्री वी. ए. मालेगांवकर, माहिम स्टेशन पर प्रमुख मुख्य कार्मिक अधिकारी श्री सहर्ष बाजपेयी, बांद्रा स्टेशन पर प्रमुख मुख्य यांत्रिक इंजीनियर श्री रविन्दर कुमार वर्मा, सांताक्रुज़ स्टेशन पर प्रमुख मुख्य सिग्नल एवं दूरसंचार इंजीनियर श्री रजनीश कुमार, जोगेश्वरी स्टेशन पर प्रमुख मुख्य इंजीनियर श्री अमित गुप्ता, बोरीवली स्टेशन पर प्रमुख मुख्य बिजली इंजीनियर श्री रजनीश कुमार गोयल तथा भायंदर स्टेशन पर प्रमुख मुख्य सामग्री प्रबंधक श्री आशीष वर्मा शामिल थे।

'जीरो रिस्क' के साथ पुलिस प्रशासन पूरी तरह सतर्क; 31 हजार से अधिक पुलिसकर्मी रथयात्रा की सुरक्षा संभालेंगे

- मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने 149वीं रथयात्रा की पूर्व तैयारियों एवं सुरक्षा व्यवस्था की उच्चस्तरीय समीक्षा की
- 240 से अधिक छत प्वाइंट, 65 ड्रोन और 2,800 से अधिक बॉडी-वॉर्न कैमरों से अहमदाबाद शहर पुलिस रथयात्रा पर निगरानी रखेगी
- 16 किलोमीटर लंबी भगवान जगन्नाथ की रथयात्रा में 101 ट्रक, 30 अखाड़े और 18 भजन मंडलियाँ शामिल होंगी

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने अहमदाबाद महानगर में 6 मिनी रथयात्राओं सहित राज्यभर में विभिन्न स्थानों पर आयोजित होने वाली 230 रथयात्राओं को शांतिपूर्ण एवं सुरक्षित रूप से संपन्न कराने के लिए मार्गदर्शन दिया।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने अहमदाबाद में परंपरागत रूप से आयोजित होने वाली भगवान जगन्नाथजी की 149वीं रथयात्रा, जो आगामी आषाढ़ी दूज के अवसर पर 16 जुलाई को निकलेगी, उसे उत्साह, उमंग, शांति, सुरक्षा एवं सफलता के साथ संपन्न कराने के लिए पुलिस तथा महानगर पालिका प्रशासन की तैयारियों की शनिवार को गांधीनगर में आयोजित एक उच्चस्तरीय बैठक में विस्तारपूर्वक समीक्षा की।

मुख्यमंत्री ने बैठक में पुलिस प्रशासन को मार्गदर्शन देते हुए कहा कि राज्य के विभिन्न स्थानों पर निकलने वाली लगभग 230 रथयात्राएँ शांतिपूर्ण एवं सुरक्षा के वातावरण में संपन्न हों, लोग उल्लासपूर्वक रथयात्रा के दर्शन कर सकें तथा किसी भी प्रकार की अप्रिय घटना न हो, इसके लिए पूरी सावधानी बरती जाए।

मुख्यमंत्री ने अहमदाबाद में रथयात्रा मार्ग पर स्थित जर्जर इमारतों एवं मकानों के आसपास दर्शन के लिए लोगों की भीड़ न हो, इसके लिए भी कड़ी व्यवस्था करने के निर्देश नगर आयुक्त को दिए।

अहमदाबाद शहर पुलिस आयुक्त श्री अनुपम सिंह गहलोत ने विस्तृत प्रेजेंटेशन देते हुए बताया कि शहर पुलिस 'जीरो रिस्क' की रणनीति के साथ पूर्ण सतर्कता एवं तैयारी रखते हुए 31 हजार से अधिक पुलिसकर्मियों की तैनाती के साथ 149वीं रथयात्रा को शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराने के लिए दिन-रात कार्य कर रही है।

इस रथयात्रा में 240 से अधिक छत प्वाइंट, 65 ड्रोन तथा 2,800 से अधिक बॉडी-वॉर्न कैमरों के माध्यम से अहमदाबाद शहर पुलिस पूरी यात्रा पर निगरानी रखेगी। यात्रा के दौरान अहमदाबाद महानगर पालिका के 15 मेडिकल ऑफिसर एवं 100 स्वास्थ्यकर्मी, 31 फायर वाहन तथा 237 अग्निशमन कर्मी भी तैनात रहेंगे।

भगवान जगन्नाथ की 16 किलोमीटर लंबी इस रथयात्रा में 101 ट्रक, 30 अखाड़े तथा 18 भजन मंडलियाँ शामिल होकर भक्तिमय वातावरण का निर्माण करेंगी। रथयात्रा शांतिपूर्ण एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में आयोजित हो, इसके लिए रथयात्रा से पूर्व शहर पुलिस द्वारा शांति समिति की 69 बैठकें, मोहल्ला समिति की 79 बैठकें तथा विभिन्न संप्रदायों के धार्मिक नेताओं के साथ लगभग 178 बैठकें आयोजित की गई हैं।

पुलिस आयुक्त ने कहा कि इतना ही नहीं; सांप्रदायिक एकता को और अधिक सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से रक्तदान शिविर, रात्रिकालीन क्रिकेट एवं वॉलीबॉल मैच, लोकडायरा तथा जेन-जी के साथ संवाद कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया है।

इस समीक्षा बैठक में मुख्य सचिव श्री एम. के. दास, पुलिस महानिदेशक श्री जी. एस. मलिक, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव श्री संजीव कुमार, नगर आयुक्त श्री बंचानिधि पाणि, मुख्यमंत्री के अपर प्रधान सचिव डॉ. विक्रांत पांडे, सचिव डॉ. अजय कुमार तथा क्राइम ब्रांच के संयुक्त पुलिस आयुक्त श्री शरद सिंघल सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।